सार संसार

अक्तूबर-दिसम्बर 2017

वर्ष : 22 पूर्णांक : 88 अक्तूबर-दिसम्बर 2017 अंक : 4

मुख्य सम्पादक
अमृत मेहता

हमारी वेबसाइट
www. saarsansaar.com
Email : saarsansaar@gmail.com

मूल्य :
एक प्रति : 20 रुपये
वार्षिक : 80 रुपये

Subscription
Single Copy : Rs. 20.00
Annual : Rs: 80.00

प्रकाशक : **अमृत मेहता**
जे-3/सी, लाजपत नगर-III
नई दिल्ली-110024
मुख्य सम्पादक : अमृत मेहता
प्रकाशन अवधि : त्रैमासिक
शब्द संयोजन : देवेन्द्र कुमार शर्मा
मुद्रक : हर्ष प्रोसेस एंड प्रिंटर्स
मूल्य : 20 रुपये : (एक प्रति)
: 80 रुपये (वार्षिक)
मुख पृष्ठ : **ज़्देंका बेज़्द्येकोवा**

Published by
Amrit Mehta
at
J-3/C, Lajpat Nagar -III
New Delhi–110024

पाठकों से अनुरोध है कि पत्रिका अथवा अंकों पर अपनी प्रतिक्रियाएँ इन पतों पर भेजें :
देवेन्द्र कुमार शर्मा, डी-580, गली नं 4, अशोक नगर,
शाहदरा, दिल्ली-110093
या
saarsansaar@gmail.com

Dear Readers,

I am proud and congratulate on getting another beautiful edition of Sar Sansaar which has a cover photo of Czech Indologist Dagmar Markova] who for so many years carries translations of Czech literature to Hindi and of the Indian literature to Czech.

With a remarkable history, Dagmar Markova is a leading Czech expert in the field of Hindi and Urdu language and literature. She is opening India to the poeope in the Czech Republic. She is publishing stories about contemporary Indian society and about the role of religion in society. She is the author of dozens of professional publications and co-author of the Hindi & Czech dictionary. Some well known translations of modern Hindi stories and monographs are for example : The Heroines of Kamasutra, The History of Indian women or Mirror of India in 20th Century. She continues to act as an External Lecturer at the Institute of Southern and Central Asia of the Faculty of Philosophy at the Charles University in Prague. She was honored with an international award for lifelong contribution to Hindu studies by Minister of External Affairs of India in 2012 and The World Hindi Honor was awarded to her at the World Conference on Hindi in Johannesburg in South Africa.

I wish thas simple, colorful, meaningful Czech Literature translation in Hindi reachers to wider audience and that I am sure will prove to be the first of many.

Milan Hovorka

Ambassador of the Czech Republic

सम्पादक की कलम से...

यह अंक एक बार पुनः चेक साहित्य को समर्पित है। 1907 में जन्मी ज़्देंका बेज़्देकोवा की पुस्तक ''मुझे लेनी कहते थे'' इस अंक की अकेली लम्बी कहानी है, हालाँकि मूल में इसे उपन्यास ही माना जाता है। 1907 में जन्मी लेखिका प्रथम और द्वितीय विश्वयुद्धों की साक्षी रही थीं, और द्वितीय विश्वयुद्ध के पाँच साल बाद की पृष्ठभूमि में लिखा गया उनका यह लघु उपन्यास उनकी सबसे लोकप्रिय रचना रही है। यहाँ तक कि यह स्कूलों में एक अनिवार्य पाठ्य पुस्तक रही है। 1947 से बच्चों और बड़ों के लिए पुस्तकें लिख रही बेज़्देकोवा को प्रसिद्धि उनके युद्ध के उपन्यासों से अधिक मिली है। 1948 में प्रकाशित ''लेनी'' युद्ध और एक ऐसी बच्ची के मानस की गहराई का एक ऐसा अनूठा चित्रण है, जिसे यूरोपीय साहित्य में बहुत सम्मान मिला है। अभी तक इस उपन्यास का अंग्रेज़ी, यूक्रेनी, रूसी, स्लोवाक, स्लोवेनी, डेनी और स्वीडी में अनुवाद हो चुका है; हिन्दी प्रथम ग़ैर-यूरोपीय भाषा है, जिसमें इसका अनुवाद प्रकाशित हो रहा है।

लेनी गत शताब्दी के पाँचवें दशक में अपने जर्मन (!) माता-पिता के साथ रहती है, और एक दिन अचानक उस पर सच्चाई खुलती है कि वे उसके असली माता-पिता नहीं हैं। रेड-क्रॉस वालों से उसे मालूम पड़ता है कि जब वह बेबी होती थी तो उसे उसकी चेक/यहूदी माँ से लेकर एक ऐसे जर्मन दम्पत्ति को सौंप दिया गया था, जिसकी नाज़ियों से अच्छी पटती थी। जर्मनी के एक छोटे नगर में रहने वाली 10 साल की बच्ची की तथाकथित माँ का व्यवहार उसके प्रति ठंडा होता है। उसका बड़ा भाई राउल कोई भी मौक़ा मिलने पर उसे प्रताड़ित करता है, स्कूल में भी। उसके सहपाठी हमेशा उसका अपमान करते हैं। बच्ची के मानस में उसके असली माता और पिता, दोनों बसे होते हैं, लेकिन किसी परछाई के रूप में। जब उनके बारे में सोचती है तो समझती है कि सपना ले रही है। अन्ततः वह जान जाती है कि उसके पिता की युद्ध के दौरान मृत्यु हो गयी थी, और उसकी माँ चेकोस्लोवाकिया में रह रही है, जीवित है। अपना जर्मन घर छोड़कर वह अपने चेक घर जाती है, एक ऐसी जगह, जहाँ एक ऐसी भाषा बोली जाती है, जो उसे नहीं आती।

बहुत मार्मिक कहानी है, उम्मीद है कि हमारे पाठकों को पसन्द आएगी।

***

अप्रैल-जून 2017 के चेक विशेषांक में हमारी माननीय सम्पादक एवं अनुवादक डागमार मारकोवा को जो चित्र छपा था, वह भूलवश किसी और हमनाम का था, जो गूगल खोज से ले लिया गया था। भूल काफ़ी भारी थी, क्योंकि मैं उनसे मिला भी हुआ हूँ। इस अंक में मुखपृष्ठ पर उनका असली चित्र है।

1

आज सुबह अध्यापिका फिर मुझ से नाराज़ हुई। हमें स्कूली कापी में निबंध लिखना था 'हमारा परिवार'। मैंने पहले से घर पर तैयार किया था, अब सिर्फ़ अच्छी लिखावट से लिखना था। पहले मैंने अध्यापिका को पढ़कर सुना दिया। वह जान गई कि मैंने यह लिखा था :

''मैं पश्चिमी जर्मनी के छोटे नगर हेरमनशटट्ट में रहती हूँ। दादी माँ कहती हैं कि हम लोग यहाँ बहुत समय से रहते आए हैं, उनके परदादा भी यहाँ रहते थे, लेकिन पहले चौक पर एक अच्छे घर में रहते थे। हमारा परिवार यहाँ बसा हुआ है। कहते हैं कि पहला विश्वयुद्ध इतना भयंकर नहीं था जितना दूसरा। हमारे लिए भयानक था, क्योंकि उसमें मेरे दादा ने वीरगति पाई थी। वह घड़ीसाज़ थे।

दादी माँ मथिल्दा हमारे साथ रहती हैं यानी मेरी माँ, मेरे भाई राऊल और मेरे साथ। पुराने घर 'घास के बड़े मैदान' में क्योंकि हमारे पहले के अच्छे घर पर बम गिर गया था। पापा नहीं हैं। वे अच्छे थे। वायलिन बजाते थे, कविता पढ़ते थे। दवाखाने में काम करते थे। युद्ध में चले गए और वापस नहीं आए।"

यहाँ मैं थोड़ी देर तक रुक गई और सोचने लगी कि आगे किसका कहना मानूँ। दादी माँ ने राय दी कि अन्त में लिखूँ कि युद्ध दुनिया की सबसे भयानक विभीषिका है। माताओं के बेटे छीन लेता है, बच्चों को अनाथ बनाता है। लेकिन अध्यापिका को अच्छा नहीं लगा। वह चाहती थी कि लिखूँ, ''मुझे गर्व है कि पापा ने वीरगति पाई। लेकिन मुझे इसका गर्व नहीं है।। काश कि पापा जीवित रहते और वही सुन्दर पुस्तकें पढ़ सकते जो दादी माँ रैक पर रखती हैं।

क्या करूँ मैं पापा को शायद भूल गई थी। मुझे ऐसा लगता है कि उन्हें सिर्फ एक बार देखा था। वह कमरे के दरवाज़े में खड़े बोले थे : ''अच्छा, यह हमारी लेनी है।"

फिर चले गए और सीढ़ियों से उनके काले बूटों की आहट सुनाई दी। यह बहुत पहले की बात है। और फिर एक दिन मम्मी ने पापा का फोटो दीवार पर टाँगकर इसके कोने में कोई हरा कागज़ और काला कपड़ा लगाकर कहा : ''तुम्हारे पापा ने वीरगति पाई।"

मेरे भाई राऊल ने, जो अब चौदाह साल का है, एकदम उछलकर एक बाँह तिरछी उठाई। उसका हाथ बिलकुल नहीं काँपा।

मुझे बहुत ताज्जुब हुआ कि वह कितनी देर तक ऐसे खड़ा रह सका था। मम्मी ने कहा, ''देखो लेनि, राऊल दाहिनी बाँह उठाए अपने पिता की स्मृति में आदर व्यक्त कर रहा है। यह आर्य अभिवादन है। तुम अभी छोटी हो, तुम्हें नहीं मालूम कि आर्य रक्त और जर्मन होना मानव का उच्चतम सौभाग्य है। जर्मनी से बढ़कर कुछ नहीं है। तुम राऊल के पास खड़ी हो जाओ।''

तब मैं खड़ी हो गई, लेकिन बाँह नहीं उठाई।

दादी माँ काँपने लगीं। फिर आरामकुरसी में गिर गईं और बहुत रोईं। बार बार कहतीं थीं ''हाय मेरे बेटे। लेकिन मम्मी खामोश रहीं और दादी माँ को झिड़क गई कि यह आपको शोभा नहीं देता, ऐसा आजकल नहीं करते। और दादी माँ दोहराती रहीं हाय मेरे बेटे।''

तब मैं बिलकुल नहीं रोई थी, रोना नहीं आया था। आज यह निबन्ध लिखते अचानक रोना आने लगा, दादी माँ का रोना याद आ गया। 'मुझे गर्व है' वाक्य के बजाय लिखना शुरू किया : 'युद्ध दुनिया की सबसे भयानक विभीषिका है...'

अध्यापिका ने मुझे देखकर गुस्से से पूछा : ''आगे क्यों नहीं लिखती?''

मैंने उत्तर नहीं दिया। आँसू पोंछ लिए।

''तुम रो रही हो?'' अध्यापिका ने नाराज़ होकर हाथ पेट पर जोड़ लिए। डाँटते हुए हमेशा ऐसा करती है।

''तुम आँसू बहाती हो?'' एक बार फिर पूछा।

मेरे बेंच के पास आकर मेरा लिखा देख लिया। जब शुरू किया हुआ वाक्य 'युद्ध दुनिया की सबसे भयानक---'' देखा तो मुझे पता चला कि हाल बुरा होगा।

अध्यापिका हाथ कूल्हों पर रखकर डाँटने लगी : ''लड़कियो, जर्मन लड़कियों, लेनि, देखो!'' मेरे रोने से बहुत गुस्से में थी। दुहराती थी कि मेरे पापा बड़े वीर थे। फिर हम सबको मिलकर 'वीरों की कविता' सुनानी पड़ी।

अन्नेलोरे ने बाँह उठाई जैसे हमारे राऊल ने तब उठाई थी। इसे ऊपर उठाए रखा तो अध्यापिका ने कहा : ''मैंने कुछ नहीं देखा, अन्नेलोरे, बाँह नीचे करो।'' अध्यापिका को अच्छी तरह से मालूम था कि यह आर्य अभिवादन है लेकिन देखना नहीं चाहती थी। आजकल तो यह अभिवादन मना है।

मैंने युद्ध वाला वाक्य काटकर लिख दिया : ''और वापस नहीं आए। क्योंकि वीरगति पाई।''

और आगे लिखने का मन नहीं था। जल्दी से लिख दिया : ''मेरी माँ का नाम रोसा है और अब वह डाक-क्लर्की का कोर्स कर रही है। भाई राऊल कालेज में पढ़ता

है और घर पर बहुत तंग करता है। मैं चौथे बालिका-विद्यालय में पढ़ती हूँ और मुझे लेनी कहते हैं।''

घंटी बज गई और हमें कापियाँ अध्यापिका को देनी पड़ीं।

अन्नेलोरे मेरे पास आकर बोली, ''ताज्जुब की बात नहीं, लेकिन लेनी अब तो छोड़ो। तुम बहुत समझदार नहीं हो, फिर भी इतना तो मालूम होना चाहिए कि अच्छी जर्मन लड़की सुबह से शाम तक आँसू नहीं बहाती।''

अध्यापिका ने यह सुनकर हामी भरी। फिर कहा : ''हाँ ताज्जुब की बात नहीं।'' और अगली क्लास शुरू हुई।

तब फूलों के बारे में क्लास हुई। यह मुझे पसन्द नहीं है क्योंकि सब फूलों के नाम याद नहीं रहते। दिमाग में गड़बड़ हो जाती है। बगीचे में अध्यापिका ने मुझसे पूछा कि क्या तुम्हें फूल पसन्द नहीं हैं।

मुझे फूल बहुत पसन्द हैं। लेकिन हमारे स्कूल के बगीचे में फूलों की केवल एक क्यारी है, बाकी सब पर गाजर ही गाजर उगती है। ऊँची कक्षाओं की लड़कियाँ इसकी निराई करती हैं। अध्यापिका उनकी देखभाल करती है।

''जी हाँ,'' मैंने धीरे से कहा, ''फूल मुझे बहुत पसन्द हैं। लेकिन गाजर ज़्यादा काम आती है।'' अध्यापिका ने हामी भरी।

जब मैंने देखा कि मेरा जवाब ठीक रहा तो उनको यह भी बताना चाहती थी कि हम छोटी टोकरियाँ बनाया करते थे और उनमें फूल रखते थे, लेकिन मुझे मालूम नहीं था किसके साथ यह खेल खेला करती थी। राऊल नहीं था, रोसा भी नहीं, हिल्डा भी नहीं, न जाने कौन था? इसलिए चुप रही।

"फूल पसन्द हैं तो इस क्यारी की निराई कर दो।'' अध्यापिका ने कहा।

अब वसन्त है तो निराई करना आसान है। कल बारिश हुई और ज़मीन भीग गई। घास-पात आसानी से मिट्टी से निकलते थे। कभी कभी टूट जाते, लेकिन हमेशा नहीं। दूसरी तरफ से अन्नेलोरे निराई कर रही थी । मैं निराई इतनी अच्छी तरह से करना चाहती थी जितनी अन्नेलोरे करती है ताकि वह मुझे बार-बार बेवकूफ़ न कहे। ''अरे लेनि!'' अन्नेलोरे ने मुझे पुकारा, ''बड़ी तेज़ी से यह बोलो, गाय तेज़ दौड़ी, फिर गिर गई।'' मैंने कोशिश की, लेकिन अचानक डंठल टूट गई और मैं क्यारी पर गिर पड़ी। मेरे नीचे कोमल नीले फूल एक-एक करके मर रहे थे। हे भगवान, अब सब कुछ बिगड़ गया। अन्नेलोरे ने निराई पूरी कर दी और मैं? रोना मना है। जब पापा की वजह से नहीं रो सकी तो फूलों की वजह से कैसे रोऊँ। बेवकूफ़। बेवकूफ़ लड़कियों, तुम लोगों को पता चलेगा कि मैं बिना रोए भी रह सकती हूँ। मुझे देखो। मैंने एक पाँव खड़ी होकर उनको बहुत लम्बी नाक का तमाशा दिखाया और जीभ निकाली।

अध्यापिका तुरन्त दौड़ी आई। मुझे झकझोरने लगी। सुन्दर नीली क्यारी नहीं रही। टूटे हुए फूल ज़मीन पर गिर पड़े हैं। एक दिन मेरे हाथ में छोटी-सी टोकरी थी और फूल इसमें रखे हुए थे। मैं ज़मीन पर बिखेर रही थी, सुन्दर नीले फूल थे और दूसरे फूल लाल थे उनको कैसे कहते थे? पता नहीं। रोना मना है, हँसना मना है, सिर्फ बाँह उठाकर उँगलियाँ सीधी रखने की इजाज़त है। नहीं, कुछ नहीं करूँगी। अध्यापिका ने मुझे झकझोरा है, कन्धे उठाए और अचानक मुझे छोड़कर कहा : ''ताजुब की बात नहीं।''

सबसे अच्छा ऐसा दिन होता है जब मम्मी साइकिल लेकर गाँव चली जाती है। तब दादी माँ और मैं अकेली रह जाती हैं। मम्मी बकरी का दूध लेने जाती है ताकि रविवार को कॉफी बनाने के लिए घर में दूध हो। रविवार को हमारे घर अंकल ओत्तो आता है। आज मम्मी चिड़चिड़ी थीं अपने हाथ से बुना हुआ नया सफ़ेद मोज़ा फट गया। दादी माँ रफ़ू करना नहीं चाहती थीं, यह कहकर कि उनकी आँखें खराब हैं और चश्मा आजकल कहीं नहीं मिलता। मम्मी के पास समय नहीं था, बहुत नाराज़ हो गई। दादी माँ ने कहा कि ये सफेद मोज़े और देशीय वेशभूषा पहने रहना क्या ज़रूरी है। मम्मी ने कहा कि जीते जी दूसरे कपड़े नहीं पहनेगी। फिर नंगे पाँव चली गई।

फिर दादी माँ ने चाय बनाई और अलमारी से गोल सा बक्सा निकाल लिया। इसमें से मिठाई निकाल ली। बोलीं कि यही थोड़ी-सी बच गई। मिठाई पर 'कार्ल्सबाद' लिखा हुआ था। दो-दो टुकड़े क्रीम से जुड़े हुए थे। दादी माँ ने कहा, ''देखो मुन्नी, तुम्हारी दावत है। युद्ध से पहले ऐसी मिठाई बहुत खायी थी।''

''दादी माँ, युद्ध क्यों होना था?''

''होना था? नहीं तो, होना ज़रूरी बिलकुल नहीं था।''

''फिर युद्ध क्यों हुआ जब ज़रूरी नहीं था?''

''इसलिए कि भगवान ने एक आदमी को अक्ल नहीं दी थी।''

''दादी माँ, भगवान है या नहीं है?'' मैंने धीरे से कहा, क्योंकि उनके जवाब से डरती थी, क्योंकि मेरी तो इच्छा थी कि भगवान हो और फरिश्ते हों और विरजिन मारिआ हो और और कि यह सब कुछ वास्तव में हो। लेकिन शायद ऐसा नहीं है।

''भगवान है, मुन्नी। किसी दिन इसका पता सबको चलेगा। वह सर्वशक्तिमान है।''

''दादी माँ, क्या आपको पता चला?''

''हाँ मुन्नी। हम सब को पता चला।''

''कैसे?''

''मुन्नी, दुनिया बहुत घमंडी हो गई थी। सारी दुनिया नहीं, लेकिन हम जर्मनों को घमंड ने बरबाद किया। यह भगवान से नहीं देखा गया।''

फिर दादी ने बहुत उदास गीत गाना शुरू किया। उनको यह गाना बहुत पसन्द है। अनाथ और सौतेली माँ का गाना है, बहुत लम्बा। यह मधुर तान मैंने पहले कहीं सुनी थी, लेकिन शब्द दूसरे थे। दादी माँ जो गाती हैं वे शब्द मुझे याद कर लेने चाहिए।

शाम को पुराना बक्सा दुबारा देखना चाहती थी। तो दादी माँ की अलमारी खोली। बक्से पर लिखा था : कार्ल्सबाद कार्लोवी वारी। ये शब्द मुझे बहुत अच्छे लगे लेकिन इनका अर्थ क्या है? मम्मी से पूछा, उन्होंने कुछ नहीं बताया और नाराज़ होकर पूछा कि यह कहाँ सुना है। दादी माँ से पूछना नहीं चाहती थी। कहीं वह न समझें कि मैं आख़िरी मिठाई खा लेना चाहती थी।

आज अन्नेलोरे और हेलगा में कुछ फुसफुसाहट हुई। मैं पास आई तो फुसफुसाहट ख़त्म हुई और उन्होंने पहाड़ा सीखने का बहाना किया। जब अपनी जगह बैठ गई तो फुसफुसाहट दुबारा शुरू हुई। मुझे बस इतना सुनाई दिया कि अन्नेलोरे बोली, ''बिलकुल सच है, हमारी कैथे को बिलकुल मालूम है।''

इनकी कैथे? मैं किसी कैथे को नहीं जानती और पता नहीं कैथे को क्या मालूम हो सकता है।

लेकिन उनकी फुसफुसाहट सुनने को दिल बहुत चाहता था। किससे पूछूँ! मैं बेंच पर अकेली बैठती हूँ, मेरी कोई सच्ची सहेली नहीं है। काश कि होती। तब मैं उसको सब कुछ बता सकती। और हम रानी विंदिशग्रेतसउ का खेल खेल सकतीं। यह खेल मुझे सबसे पसन्द है। दादी माँ ऐसी एक पुस्तक पढ़ती हैं और कहती हैं कि बड़े लोगों में हमेशा षड्यन्त्र होते थे। जो ऊपर है वह तिकड़म भिड़ाता है, चाहे रानी हो या काऊंटेस या ईवा ब्राऊन।

''ईवा ब्राऊन कौन थी?'' मैंने उस दिन पूछा।

''अरे उसका खेल न खेलो। उसका कल ख़त्म हुआ।''

मुझे बुरा लगा कि कोई ठीक जवाब नहीं मिला, मम्मी से एक दिन पूछा तो उन्होंने फिर भी जवाब दिया : ''वह सारे ज़माने के सबसे यशस्वी पुरुष की यशस्वी पत्नी थीं।'' मेरी समझ में आ गया कि अडोल्फ हिटलर से मतलब है। मम्मी उसकी हमेशा बड़ी तारीफ़ करती हैं, लेकिन फुसफुसाकर कहीं किसी को सुनाई न दे।

तो खेली लेकिन मुझे नहीं मालूम कि तिकड़म क्या चीज़ है और कैसे भिड़ाया जाता है? ऐसा खेल खेली कुछ कुर्सियाँ लीं ये गाड़ियाँ हैं और उन पर दादी की दी हुई गुड़िया बिठाईं। इनके नाम रखे।

फिर बातचीत शुरू हुई। काउंटेस ईवा ब्राऊन से पूछा : 'आपके पति फ़ासिस्ट हैं या फ़ासिस्ट-विरोधी?'' ईवा ने जवाब दिया : ''श्रीमती, मेरे पति कोई फ़ासिस्ट-विरोधी नहीं हैं, यह आपको मालूम होना चाहिए।'' फिर एलिजाबेथ बीच में बोली : ''अरे

मिसेज़ ब्राऊन, क्या यह सिर्फ अफवाह है कि आपके पति की नानी या दादी यहूदी थी न, और शायद नज़रबन्दी कैम्प में रह चुकी है?" काऊंटेस गरम हो गई : ''मिसेज़ ब्राऊन, आप ऐसी बातें सहन न करें, पुलिस को सूचित करें। हमारे बिल्डिंग में भी एक औरत ने अफवाह फैलाई कि हमारे घर में कोई गड़बड़ है। अब उसके सिर पर आ पड़ी।"

''दादी माँ, जब कहते हैं कि कि घर में कोई गड़बड़ है तो इसका मतलब क्या है?"

''यह किसने कहा, मुन्नी?"

''राऊल के दोस्त ने राऊल से कहा, चिन्ता न करो, हमारे घर में भी कुछ गड़बड़ है।"

''अरे उस शैतान की बातें रहने दो। वह कौन कहने वाला है कि गड़बड़ है या नहीं। गड़बड़ का मतलब है कि सब कुछ ठीक-ठाक नहीं है।"

दादी माँ और मैं रज़ाई भरने के लिए पिच्छ तैयार कर रही थी। अब हमारे पास सिर्फ एक रज़ाई बच गई है। दादी माँ सुनाने लगीं कि युद्ध से पहले इलाज के लिए कार्ल्सबाद गई थीं। वहाँ गर्म सोते हैं, अच्छी कॉफी बनती है और राजकुमार राजकुमारियाँ गर्म सोते का पानी पीते हैं। फिर ठीक हो जाते हैं। खुश हो जाते हैं।

मैंने पूछा कि कार्लोवी वारी शब्द के क्या मायने हैं। दादी माँ ने बताया कि चेक शब्द है। ''दादी माँ, चेक शब्द के क्या मायने हैं?'' ''अरे यह तो मालूम है न कि कुछ चेक लोग हैं। स्कूल में नहीं पढ़ा क्या? वे कम हैं और हमारे दुश्मन हैं।"

दादी माँ ने कहा कि पता नहीं, लोग ऐसा कहते हैं। दादी माँ सिर्फ एक चेक महिला को जानती थीं, मिसेज़ कोनोपासेक, और वह बुरी बिलकुल नहीं थीं, उलटे अच्छी थीं और बहुत सुन्दर थीं। वह बहुत अच्छे 'क्नेद्ले' बनाती थीं उबले हुए आटे के गोले हैं, इनके टुकड़े काटे जाते हैं और मांस के साथ खाए जाते हैं। बहुत अच्छा चेक भोजन है। ''क्या मिसेज़ कोनोपासेक के बच्चे थे?" दादी ने हामी भरी कि हाँ, यरमीला नामक बेटी थी। वह भी सुन्दर थी। अब मुझे मालूम हुआ कि क्या करूँगी। अपनी सबसे सुन्दर गुड़िया का नाम यरमीला कोनोपासेक रखूँगी और वह रानी विंदिशग्रेत्स से मिलने जाएगी। वहाँ क्नेद्ले खाएगी। फिर आँगन में मिट्टी और पानी के क्नेद्ले बनाने गई। राऊल ने पास से गुज़रते पूछा कि क्या कर रही हो। मैंने बताया कि क्नेद्ले बनाती हूँ। उसने पूछा कि यह क्या है। मैंने दादी माँ का शब्द दुहराया : 'यह चेक है।" राऊल अचानक गुस्से हो गया। लात मार के मेरा आटा एकदम बिगाड़ दिया। मैं बहुत रोई लेकिन उसने मेरी चोटियाँ पकड़कर उमेठ दीं। मैंने उसे दाँतों से काटा लेकिन उसने ढीला न किया। तमतमाकर चिल्लाता रहा : ''हरामज़ादी कहीं की।" राऊल बुरा लड़का है। मम्मी से मेरी शिकायत की। मैंने बताया कि उसने मेरा गुँधा हुआ आटा खराब कर दिया, लेकिन मम्मी उलटे मुझसे नाराज़ हो गई। नहीं, यह ठीक नहीं है। मैंने तो कोई बुरा काम नहीं किया,

सिर्फ मिट्टी खेली। लेकिन राऊल ने बिगड़ के मेरा सारा गुँधा हुआ आटा लात मारकर खराब कर दिया। सिर्फ इसलिए कि 'चेक' था। अगर उसने आकर कहा होता : ''देखो लेनि, चेक लोग दुश्मन हैं, बुरे लोग हैं।" तो मैं मान गई होती, और कोई दूसरा खेल खेलती। लेकिन वह बस चिल्लाने और डराने लगा।

स्कूल में भी यही होता है, जब अन्नेलोरे हाथ उठाकर ज़ोर से कहती है : ''मैडम, लेनी की कापी में घसीटकर खींची हुई तसवीरें है।" तब अध्यापिका मेरी कापी देखकर खामोश रहती है क्योंकि मेरी कापी में बादलों की तसवीर है। उनको मालूम भी है कि लेनी की खींची हुई तसवीर सबसे अच्छी है। लेकिन गाने की क्लास में यूँ ही खामोश नहीं रह सकती। लेनी को एक बार ही कोई गाना सुनाइए। वह शब्द नहीं याद कर पाएगी, लेकिन तान? तुरन्त, कुछ देर बाद या कल कभी भी वही गाना सुनाएगी। इम्तिहान में मैंने एक कठिन गाना सुनाया : ''लाल गुलाब ढलान में खिला।" शुरू में अध्यापिका ने दाँत निकाले, ''तुम ज़रा बघारती तो नहीं हो? ऐसा कठिन गाना।'' लेकिन फिर सुनती रह गई और अन्नेलोरे भी हैरान होकर सुनती रह गई। मुझे लगा कि मुँह से नहीं, दिल से गाती हूँ। मुझे इन्तज़ार था कि अध्यापिका क्या कहेगी। वह बोली, ''हाँ, गाने और तमाशा खड़ा करने में तुमसे बढ़कर कोई नहीं। यह तुम्हारी नस-नस में है।"

तमाशा। यह तो पुतली नाच है न? मैंने सिर्फ एक बार देखा था, बहुत दिन पहले, जब अस्पताल में थी। मसख़रा इधर-उधर दौड़ता था, कूदता था, घंटियाँ बजाता था, ताली बजाता था, लेकिन मैं सिर्फ रोती थी और मम्मी को पुकारती थी। मसख़रे को ज़रूर बुरा लगा।

घर आकर मैंने राऊल से पूछा कि क्या हमारे परिवार में कभी कोई गायक या मसख़रा था। मैंने उसे बताया कि अध्यापिका ने सुबह क्या कहा था।

राऊल बोला : ''नहीं हमारे परिवार में ऐसा कोई नहीं था।'' फिर दादी माँ से कहा, ''उस औरत को जबान सँभालनी चाहिए।"

''तुम्हें भी," दादी माँ ने कहा। राऊल ने कुछ बड़बड़ाकर बाल्टी ली और पानी लेने गया। नल का पानी आजकल फिर एक बार नहीं आता।

मम्मी अकसर बताती है कि राऊल खेला करता था जब बहुत छोटा था।

उसके पास काला गुड्डा था । एक दिन उसके काले चेहरे से नाराज़ होकर उसे पंप पर लटका दिया था, मानो सूली हो। इसके चारों ओर नाचा था, हँसा था। दादी माँ ने काले गुड्डे को सूली से उतार दिया, लेकिन राऊल ने बुरा मानकर उसे कुएँ में फेंक दिया। बाद में रोया कि काला गुड्डा नहीं है।

कभी कभी पड़ोस के लड़कों के साथ फ़ौजी का खेल खेलता था। लेकिन यह बहुत दिन तक नहीं चला। लड़कों को सहन नहीं था। राऊल हमेशा जर्मन फ़ौजी

बनता था, दूसरे लड़कों को रूसी, अँग्रेज़ फ्रेंच, बनना था। राऊल हर बार जीतता था और हुक्म चलाता था। उनकी हमेशा शान्ति की शर्तें बहुत अपमानजनक थीं। उनको सड़क पर घोड़े का मल समेटना पड़ता था कितना अपमान। ताज्जुब की बात नहीं कि राऊल के साथ खेलना कोई नहीं चाहता था।

एक लड़के को रूसी बनना पड़ा। वह राऊल से दो साल बड़ा था। उसका बाप युद्ध से पहले हमारा घर सँभालता था। फिर बमबारी में मर गया था। हँस को कई बार रूसी बनना पड़ा था, लेकिन एक दिन वह गुस्से में आकर राऊल को खूब पीट गया। सुनकर मुझे बड़ी खुशी हुई। अफसोस कि मुझे उसके ये खेल याद नहीं हैं।

जब राऊल बहुत छोटा था तो खाना खाते समय अचानक बोला : ''मेरी नाक में कंकर है।" तब उसे खुशी हुई यह देखकर कि सबके सब कितने परेशान हुए। उसे डॉक्टर के पास ले गए। तब वह बोला : ''नाक में कुछ नहीं है।" लेकिन तब उस पर विश्वास किसी को नहीं रहा और डॉक्टर ने खूब डाँट लगाई। यह अच्छा हुआ। राऊल मुझे पसन्द नहीं।

मेरी हिम्मत थोड़ी बढ़ गई तो पूछा : ''मम्मी, मैं जब छोटी थी तो क्या करती थी?"

मम्मी ने मुस्कराकर कहा ''तुम क्या बड़ी हो, तुम अब भी छोटी हो न।"

''नहीं तो, मेरा मतलब और था। मैं जानना चाहूँगी कि जब बहुत छोटी थी तब क्या करती थी। जब दो साल की थी।"

"दो साल की थी तो बस रोती चीखती थी और खाना खाती थी। तुम बुरी बच्ची थीं। और चार साल की थीं तो अस्पताल में थी, तुम्हें अस्पताल याद नहीं है क्या?"

अस्पताल। हाँ, कोई स्टेशन है, फाटक बन्द होता है। बहुत सुबह सवेरे, मुझे सर्दी लगती है, काले कपड़े पहने हूँ, ज़रूर बहुत छोटी हूँ और फिर अचानक कहीं अँधेरे में हूँ और कोई मुझे मार रहा है...

अचानक मुझे लगा कि अपना दाहिना हाथ देख लूँ इस पर दो टेढ़े दाग हैं, बेंत की मार के दाग। कभी बहुत समय पहले उनसे खून फूट गया था हाँ, यह अस्पताल में हो गया था।

दादी माँ ने देखा कि अपना हाथ देख रही हूँ। मुझे गोद में खींच लिया। मैं सिसकियाँ भरने लगी, काँपने लगी और मुझे मालूम था कि थोड़ी देर में नाक से खून बहेगा। जब भी रोती हूँ हमेशा ऐसा होता है

मम्मी अँग्रेजी में कुछ बोलकर शायद यह कि लड़की लाड़-प्यार से बिगड़ गई है चली गई। मैं दादी माँ के साथ अकेली रह गई। आँखें बन्द कर लीं। फिर भी देखा कि बेंत दो बार उठाकर मारती है और मारती है हाथ पर पहले पतली गुलाबी रेखा नज़र आई, फिरे लाल बूँद नकली, फिर दूसरी, तीसरी ख़ून।

अब दादी माँ की गोद में नींद आ गई और थोड़ी देर में मुझे महसूस हुआ कि दादी माँ ने मुझे मेरे पुआल के गद्दे पर लिटाया। लैम्प बुझाकर रसोईघर में चली गईं। राऊल का कहना सुनाई दिया : ''इस लड़की की करतूतें सहन कौन करे।" दादी माँ ने सिर्फ 'चुप' कहा।

मुझे अब रात दिन से ज़्यादा पसन्द है। दिन में क्लास है और अध्यापिका उँगली उठाए भाषण देती है : ''जर्मन लड़की को ऐसे नहीं करना चाहिए," या कहती है : 'जर्मन लड़की को प्रतिशोध के दिन के लिए तैयार रहना चाहिए।"

फिर घर पर खाना मिलता है यानी आलू और कोई घास, खाने के बाद छकड़ा लेकर कबाड़ समेटने जाओ घर-घर में कोई पुराना सामान माँगना पड़ता है और लोग नाराज़ हो जाते हैं, क्योंकि उनके पास अब कुछ नहीं बचा। फिर रात का खाना आलू और कोई घास। या तो अंकल ओत्तो आएगा या नहीं आएगा और तब मम्मी चिड़चिड़ी हो जाती है।

लेकिन रात। सन्नाटा है, सब सोते हैं, सिर्फ उनकी साँस सुनाई देती है, सिर्फ मैं जागती हूँ और सपने बुलाती हूँ। पहले कोई बुरा सपना आता है, फिर बदलता है और अन्त में बहुत सुन्दर सपना आता है।

ऐसा होता है :

पहले उस भयानक अस्पताल में हूँ, सफेद कपड़े पहने लोगों को देखती हूँ, उनकी भाषा नहीं समझती हूँ। शायद बीमार हूँ लेकिन पलँग पर नहीं लेटी हूँ, कमरे से गलियारे में और वापस घूमती फिरती हूँ। सर्दी लगती है, काले कपड़े पहने हूँ और रोती रहती हूँ। एक डॉक्टर दूसरे से कहता है : 'यह बच्ची नहीं बचेगी।' फिर दोनों समझ में न आने वाली बातें करते हैं और मैं इधर-उधर भटकती हूँ। फिर कोई मेरी ओर गुड़िया बढ़ाता है और सपना बदल जाता है, अब सुन्दर सपना आएगा।

गुड़िया देशी वेशभूषा पहने है। लाल साया, सफेद कालर वाला ब्लाउज । मख़मल की चोली, सफेद पेशबन्द, लाल मोज़े और काले जूते, असली भूरे बालों पर कलफ की हुई टोपी है और इसके साथ बड़ा सफेद फीता सब कुछ का मिलकर कोई अजीब नाम था...उस टोपी का क्या नाम था, मुझे याद नहीं।

उस गुड़िया का क्या हुआ?

मैंने उसका नाम नीना रखा था। उसकी आँखें बन्द होती थीं, वह सो जाती थी अब मुझे भी नींद आ रही है।

और आज यह सपना आना है :

पापा युद्ध में जा रहे हैं। पता नहीं कहाँ जाना है, शायद युद्ध में। मैं सो रही थी, मुझे जगा दिया। बहुत सारे आए, शायद पाँच।

वे कौन थे?

शायद फ़ौजी।

क्यों आए?

पापा को युद्ध में ले जाने आए। शायद सबको इसी तरह से लेने आते हैं।

कमरे में कितना शोर है। पापा तैयार हो रहे हैं। वे लोग मदद करते हैं। कुछ ढूँढ़ते हैं। मुझ पर कोई ध्यान नहीं देता। मम्मी रोती हैं, चीखती हैं। अरे हमारी माँ को रोना आता है, हालाँकि कहती हैं कि रोना कभी नहीं आता। उस बार मुझे पकड़कर सिर मेज़ पर रखकर माथा पीटते हुए घुटने टेके। शायद चाहती थीं कि फ़ौजी पापा को छोड़ दें। लेकिन नहीं छोड़ा।

पापा ने मुझे बाँहों में उठाकर मुझसे अजीब से शब्द बोले अच्छा 'टा-टा'। बोले नहीं, कुछ और, कोई 'ला-ला-ला'। यह मुझे याद है और यह भी याद है कि पहले अक्षर पर बल था, दूसरे पर नहीं।

बाद में पापा ऐसा कभी नहीं बोले थे। बदल गए थे, वीर बन गए। ऊँचे बूट पहने बोले थे, 'अच्छा, यह हमारी लेनी है।' और फिर वीरगति पा गए।

लेकिन अब अच्छा सपना आना चाहिए। ऐसा सपना चाहूँगी कि कोई मुझे गुलाबी रज़ाईवाली खटोली में सुलाए और अच्छा गाना सुनाए। कौन? मम्मी?

पता नहीं। हमारी मदर को गाते कभी नहीं सुना। फिर कौन गा रही है, हाथ फेर रही है?

पता नहीं। हमारी मदर हाथ नहीं फेरती। लेकिन मुझ पर तो कोई हाथ फेर रही है।

कल अच्छे सपने नहीं आए। अजीब से थे, मेरी समझ में नहीं आए। फिर अचानक सच में नींद आ गई। तो यह भी नहीं मालूम कि 'मेरा' सपना था या सोते में सपना आया।

अंकल ओत्तो से डरती हूँ। वह पहले फ़र्श देखता है, फिर ऊपर। भूत सा लगता है। राऊल को भी अच्छा नहीं लगता। इस बात पर हम दोनों सहमत हैं।

ओत्तो मम्मी से धीरे से कहता है : 'हिटलर जिन्दाबाद'। फिर दोनों कमरे में जाकर बातें करते हैं या खामोश रहते हैं।

एक दिन दादी माँ का मम्मी से कुछ झगड़ा हो गया। दादी माँ बोलीं, ''यह अच्छा नहीं लगता कि वह आदमी तुमसे मिलने आता है।''

मदर बुरा मान गईं। ''माँ जी, आपको अच्छी तरह मालूम है कि उसके बिना ज़िन्दगी मुश्किल हो जाती।'' दादी माँ बोलीं, ''अच्छा अच्छा, लेकिन हमारा नाम बिगड़ जाता है।'' मम्मी ने फिर लम्बा भाषण दिया। पार्टी, अन्तिम स्तम्भों और भविष्य की बात की। यह भी कहा कि भविष्य बताएगा।'' कई बार कह दिया : ''हमारा तो कर्तव्य है।''

दादी माँ ने मुस्करा कर सिर हिलाकर कहा : ''रोसा, सीधी बताओ। जवान औरत हो, मैं समझती हूँ, लेकिन अच्छे आदमी भी मिलते हैं। क्या तुम्हें याद नहीं राऊल कैसी आदमी था?''

मम्मी कुछ सोचकर बोलीं 'हाँ राऊल था राऊल। ओत्तो जर्मन कौम के महान आदर्शों के प्रति निष्ठावान है।'' दादी माँ ने बस हाथ हिलाकर कहा : ''तो अभी तक पेट नहीं भरा?''

और मुझे ऐसा लगा कि यह कहते मेरी ओर देखा।

लेकिन क्रम दूसरा है। ऐसा :

वे कमरे में फुसफुसा रहे हैं या खामोश रहते हैं। एक दिन राऊल ने कहा कि चलो दरवाज़े से कान लगाकर सुन लें।

पहले उसने कान लगाया लेकिन मुझे भी सुनाई दिया। ओत्तो बोला : 'रोसा, तुम्हें मालूम है यह सब कुछ क्यों करता हूँ। और यह भी मालूम है कि तुम्हारा फ़र्ज़ क्या है? हमारे घर में सुरक्षा नहीं है। यह लो, अपने यहाँ छिपाकर रख लो।''

मैं पूछने वाली थी कि मम्मी को क्या दे रहा है, लेकिन राऊल ने मुझे धकेलकर हाथ पकड़ लिया और दोनों भाग गए।

कोई एक घंटे बाद मम्मी कमरे से निकलीं, उनकी आँखें लाल थीं। रोई थीं। तो फिर भी रोना आता है।

फिर सब रसोईघर में चले गए और दादी माँ ने क्षमा माँगी कि खाने का अलग कमरा नहीं है। पहले वाले घर में था।

खाना खाकर कॉफी या वाइन पीते हैं जो ओत्तो ले आए। किसी दिन बछड़े के मांस का टुकड़ा ले आया और बड़ी बोरी चेरी भी ले आया। मुझे भी कुछ चेरी मिली, राऊल को ज़्यादा मिली। इससे पहले मैंने चेरी कभी नहीं खाई थी। अंकल ओत्तो ने हँसकर कहा कि ज़रूर पहले कभी न कभी खाई थी लेकिन, मुझे चेरी का स्वाद याद नहीं रहा था।

किसी दिन राऊल के लिए नई पतलून ले आया, उसकी पुरानी पतलून बहुत घिसी हुई है।

माँ ने पूछा कि कहाँ से ली। अंकल हँस दिया कि एक यहूदी से ली। मम्मी ने कहा कि अच्छी तरह से समझती है, और दोनों हँस पड़े।

यहूदी का उल्लेख सुनकर मुझे एर्ना क्राउस याद आ गई। हमारी कक्षा में पढ़ती थी। वह इस साल में आ गई, पहले कहीं पहाड़ों में सनाटोरियम में रही थी। एर्ना का कोई अपना नहीं है। कोई भी नहीं, न पापा न मम्मी। एक महिला के पास रहती है। यह भी यहूदी है।

एर्ना आई तो मुझे तुरन्त पसन्द आई। उसकी आँखें कोयले जैसी काली थीं।

अध्यापिका बोली : ''नई छात्रा आई है, एर्ना। शायद तुम लोगों में अच्छी बनेगी। उसके पास कौन बैठना चाहेगी?'' यह सवाल अजीब था। अध्यापिका कभी नहीं पूछती कि कौन लड़की किसके साथ बैठना चाहती है। कहती है : ''तुम यहाँ बैठो, तुम वहाँ बैठो।''

अन्नेलोरे फुसफुसाई : ''सुनो, यह तो यहूदी होगी।'' किसी लड़की ने हाथ नहीं उठाया। मैंने भी नहीं। मुझमें साहस नहीं था।

अध्यापिका ने कई बार हमें बताया था कि आजकल यहूदी ईसाइयों के बराबर हैं और अब कोई उन पर हाथ नहीं उठा सकता लेकिन हर बार यह भी कहा : ''बच्चों को यह चेतावनी देने का सरकारी आदेश है।'' एक बार यहाँ तक कहा : ''अच्छा भगवान जी की कृपा से हमारे शहर में अब कोई यहूदी नहीं रहे, इसलिए यह आदेश पूरा पढ़कर सुनाना ज़रूरी नहीं है। स्पष्ट है कि वह इससे खुश है कि फ़ासिस्टों ने सब यहूदियों को हटा दिया था।

मैंने शायद किसी यहूदी को कभी नहीं देखा था। अब जाकर इसकी नौबत आई।

अन्नेलोरे ने हाथ उठाया : ''मैडम, इसे लेनी के पास बिठा दीजिए।'' लेकिन अध्यापिका ने कहा : ''बिलकुल नहीं। यह तो अच्छी संगत होती। नहीं, लेनी ध्यान एकत्र नहीं कर पाती।''

एर्ना को पिछली बेंच पर बिठा दिया, जैसे मैं पहली बेंच पर बैठती हूँ। अकेली।

हमारी कक्षा में दो महीने तक पढ़ा लेकिन किसी से बात नहीं की । डरपोक थी और कभी कभी आँखें फाड़े देखती थी मानो नहीं समझती हो कि क्या बात है। वह महिला उसे रोज़ स्कूल तक पहुँचाती थी और क्लास ख़त्म होने पर लेने आती थी। मैं हमेशा उनके पीछे चलती उनको देखती थी। एक दिन उस महिला ने कहा : ''अरे, तुम एर्ना के साथ खेलना चाहोगी? देखो, यह अभी नहीं खेलेगी, यह बहुत दुख भुगत चुकी है।'' फिर एर्ना को ले गई। बाद में, जाड़ों में एर्ना स्कूल नहीं आई। अगले दिन भी नहीं आई, तीसरे दिन भी नहीं। उसे न्यूमोनिया हो गया था। फिर अचानक वह महिला स्कूल के सामने नज़र आई। बताया कि एर्ना ठीक हो रही है और मुझसे मिलना चाहती है। कुछ समझ नहीं आया कि क्या करूँ। मम्मी, अंकल और राऊल कहते हैं कि जर्मनी का सारा दुख और गरीबी यहूदियों का क़ुसूर है, कि यहूदी अशुद्ध जीव हैं। लेकिन मेरा मन एर्ना से मिलने का था। एर्ना मुझे हमेशा मुझ जैसी उदास लगती थी।

तो उस महिला के साथ चली। उनका मकान बहुत अच्छा और साफ़-सुथरा था, लेकिन गरीबी बहुत थी। एर्ना महिला को आंटी कहती थी, लेकिन महिला ने कहा : ''मैं एर्ना की सगी आंटी नहीं हूँ। इसकी माँ मेरी करीबी सहेली थी और उसके

गैस-चैम्बर में जाने से पहले मैंने उसे वचन दिया कि एर्ना को कभी नहीं छोड़ूँगी।''

एर्ना नहीं हँसी, सिर्फ आँखें फाड़कर देखती रही। मुझे मालूम नहीं था कि गैस में जाने का क्या मतलब है। जानने को उत्सुक थी। जब आंटी कमरे से निकलीं तब एर्ना बोली : ''मम्मी दाएँ गईं और आंटी बाएँ। जो दाएँ गए वे गैस में पहुँचे।''

''फिर वहाँ क्या हुआ?''

''वे लोग पहले चीखते चिल्लाते थे। फिर गिर गए और साँस बन्द हुई।''

''तुम्हारी मम्मी भी?''

''हाँ, पहले चीखी चिल्लाई, फिर गिर गई और साँस बन्द हुई।''

''तुमने मम्मी को वहँ जाने क्यों दिया?''

''नाज़ियों ने उन्हें ज़बरदस्ती भेज दिया।''

''यह झूठ है। हमारी मम्मी का कहना है कि हम वफ़ादार नाज़ी हैं लेकिन हमने तुम्हारी मम्मी को गैस में नहीं भेजा।''

मुझ से अब धीमे बोला नहीं गया, चिल्लाई और एर्ना बिस्तर में छिपकर काँप रही थी। यह देखकर मुझे रोना आ गया। उसकी मम्मी को गैस में भेजी जाने की क्षमा माँगी। मैं बहुत लज्जित थी कि हमने...कि उन लोगों ने उनको गैस में भेज दिया था । एर्ना फिर बिस्तर से निकली और फिर मैं उसके पास पलँग पर लेट गई और दोनों साथ सो गईं।

फिर एर्ना की आंटी आकर बोली : ''अरे सात बज गए, मुन्नी, तुम्हें घर जाना चाहिए, घरवाले परेशान होंगे।''

मैंने हामी भरी, हालाँकि मुझे खूब मालूम था कि परेशान नहीं होंगे, लेकिन मार खाऊँगी। एर्ना की आंटी ने कहा : ''लो अब बच्चियो, विदा ले लो। एर्ना अब स्कूल नहीं आएगी। हम यहाँ खुश नहीं हो सकतीं। वापस प्राग जाएँगी।''

मैंने उनका हाथ पकड़कर हिलाया, मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था, लेकिन कुछ ही बोल पाई, बस दिल धड़क रहा था।

यह बहुत पहले की बात है। एर्ना चली गई। उसकी स्कूली रिपोर्ट कैसी होगी? आज पन्द्रह जुलाई है, पढ़ाई का आखरी दिन। मेरी रिपोर्ट में जैविकी और व्याकरण के अंक तीन हैं, चित्रांकन, गाने और गणित के एक-एक अंक एक है। बहुत अच्छी रिपोर्ट नहीं है। अन्नेलोरे की रिपोर्ट सबसे अच्छी है, लेकिन यह भी ठीक नहीं। अध्यापिका अकसर उससे कहती है : ''तुम्हारी माँ आदर्श जर्मन महिला है।'' अन्नेलोरे के तीन भाई हैं, लेकिन बड़ा भाई उनके साथ नहीं रहता। और अन्नेलोरे की माँ कहती है : ''वह मेरे लिए मर गया।'' हिलडा ने एक दिन अन्नेलोरे से पूछा : ''तुम्हारा भाई फ़ासिस्ट-विरोधी है क्या?''

अन्नेलोरे का चेहरा पीला पड़ गया और उसने हिलडा की ओर पीठ की।

फिर मैंने हिल्डा से पूछा कि फ़ासिस्ट-विरोधी क्या होता है। लेकिन उसे मालूम नहीं था। कहा कि अगले दिन बताएगी। अगले दिन फुसफुसाकर बताया कि फ़ासिस्ट-विरोधी कायर हैं।

यह तो झूठ होगा। हिल्डा में बताने की हिम्मत नहीं होगी इसलिए टाल दिया। अध्यापिका को हमें बताना चाहिए था, लेकिन उसने भी हर बार टाल दिया यह कहकर कि ऐसी बातें तुमहारे लिए नहीं हैं। और मैं पूछती तो मुझ पर ज़रूर डाँट पड़ती।

लेकिन आज अध्यापिका ने हमसे विदा ली। बोली : ''जर्मन लड़कियों, ये दिन हमारे महान राष्ट्र के अपमान के दिन हैं। यह सोचो, खासकर अब जब बिछुड़ रही हैं। तुम लोगों में से ज़्यादातर उच्च स्कूल में दाखिल होंगी, लेकिन मैं इस शहर को छोड़ रही हूँ, क्योंकि इस शहर के लिहाज़ से मैं बहुत बड़ी देशभक्तिन हूँ। तुम लोग अभी छोटी हो, तुम लोगों को हमारे महान साम्राज्य की प्रतिष्ठा याद नहीं है। कम से कम यह वाक्य याद कर लो और सुबह आँखें खोलते ही और रात को सो जाने से पहले दुहराया करो ''अपने दुश्मनों से नफ़रत करती हूँ।''

फिर जल्दी चली गई और मेरे अचानक रोंगटे खड़े हो गए। मेरे सामने बेंच पर लाल गुलदस्ता पड़ा हुआ था। दादी माँ कल ये छोटे छोटे गुलाब ले आई थीं। उन्होंने कहा कि विदाई के लिए अध्यापिका को फूल देना चाहिए। ऐसा आदेश है। लेकिन मैं नहीं दे पाई।

फूल लिए घर चली। लेकिन डरती थी कहीं दादी माँ बुरा न मानें। जब पुल पर चल रही थी तो फूल नदी में बहाए। कितने अच्छे फूल थे, लेकिन किसको देती?" किसी को मेरा प्यार नहीं चाहिए।

शाम को राऊल ने कहा : ''मैंने मिसेज़ श्वार्त्स को घर छोड़ते देखा। दो लड़के छकड़ा खींच रहे थे, अन्नेलोरे धकेल रही थी।"

''कितनी अच्छी अध्यापिका थी।'' माँ ने कहा। ''उसको निकालते-निकालते निकाल दिया।"

''किसने?" मैंने पूछने की हिम्मत कर ली।

''फ़ासिस्ट-विरोधियों ने।'' नाराज़ होकर मदर बोली।

राऊल हँस दिया : ''उसे हिटलर की शस्त्रधारी कहते थे, लेकिन वह हिटलर से भी बढ़कर है।"

मुझे बहुत दिन से कोई सपना नहीं आया, लेकिन अब छुट्टियों में हर रात सपने आते हैं। इस हफ ते अंकल ओत्तो मुर्गी ले आया और मम्मी के लिए स्ट्रोबेरी ले आया। दोनों ने कमरे में स्ट्रोबेरी खाए। मैंने दादी माँ से पूछा क्या स्ट्रोबेरी अच्छे हैं। उन्होंने नहीं सुना या सुनी अनसुनी की। और मैंने मन ही मन स्ट्राबेरी से भरी बड़ी टोकरी

देखी। एक स्ट्रोबरी मैंने खाई और किसी ने आवाज़ दी कि कपड़े खराब न करो। अचानक मेरे सामने सफ़ेद पेशबन्द बाँधे यरमीला खड़ी है वह राजकुमारी है और नहीं भी है।

''दादी माँ, क्या आपको मालूम है मेरी कागज़ की गुड़िया कहाँ हैं?"

दादी माँ को हमेशा मालूम है कौन-सी चीज़ कहाँ है। बोली : ''मैंने अपनी अलमारी में रखी हैं। भूरे बक्से में हैं।"

मेरी रानी और ईवा ब्राउन बक्से से निकल गईं और यरमीला भी। कितनी सुन्दर है। पीछे यह क्या हुआ? पीछे तो मैंने खुद लिखा था यरमीला...और अब यहाँ कुछ नहीं है। बस खाली जगह और सादा कागज़ है, लेकिन कागज़ कुछ घिसा हुआ है, पता चलता है कि वहाँ कुछ लिखा हुआ था जो अब नहीं है। क्यों? किसने हटाए वे शब्द?

यरमीला को आँगन में ले गई, स्याही और पेन साथ ली और मोटे अक्षरों में पीछे लिखा : 'यरमीला कोनोपासेक, मेरी सबसे प्यारी गुड़िया।" अच्छा, हो गया, सब दुश्मनों के बावजूद। अब कोई नहीं हटा सकेगा युग युगों तक लिखा रहेगा।

दादी माँ ने बालकनी से आवाज़ दी। पूछा क्या लिख रही हो। मैंने ऊपर आकर शिकायत की कि गुड़िया को क्या हो गया। दादी माँ को शायद कुछ मालूम नहीं था, लेकिन बोली : ''तुम्हें यह नाम इतना अच्छा लगता है क्या? लेनी इससे कहीं अच्छा नाम है।"

''नहीं। मुझे यरमीला नाम सबसे अच्छा लगता है।"

''अरे ऐसा नाम तो किसी का नहीं है।"

''है तो, मैंने बहुत बार सुना। और यह नाम किसी का हो न हो, मेरी गुड़िया का नाम यही है।"

फिर मुझे तरस आया कि दादी माँ को ऐसा जवाब दिया। रात को जब पलँग पर लेटी थीं और मैं अपने पुआल के गद्दे पर तो उनके पास ऊपर चढ़कर मैंने कहा : ''दादी माँ, मैं अपनी बड़ी गुड़िया का नाम मथिलदा रखूँगी, आप पर। यह भी बहुत अच्छा नाम है।"

दादी माँ मुझे अपने पास खींचकर फुसफुसाई : ''मेरी मुन्नी।" फिर मुझे महसूस हुआ कि दादी माँ मुझे गद्दी पर लिटा रही हैं और मुझे सपना आया। अपनी इच्छा का सपना नहीं, सच्चा सपना। अचानक कुत्ता नज़र आया और खरगोश के पीछे पड़ गया। पापा ने कुत्ते को आवाज़ दी, ''वोरेख़, वोरेख़", मैं भी आवाज़ देने लगी वोरेख़, वोरेख़। और चिल्लाती रही क्योंकि मुझे खरगोश पर तरस आ गया।

मेरी आँख खुल गई तो मेरे ऊपर मम्मी और अंकल ओत्तो खड़े थे। मैंने जल्दी आँखें बन्द कर लीं और ऐसे साँस लेने लगी मानो गहरी नींद सो रही हूँ।

अंकल फुसफुसाया : ''यह क्या चिल्ला रही है?''

''मैं नहीं समझी। लेकिन वह इसमें जमा है। इसका कुछ नहीं किया जा सकता।''

''अगर ये दोनों तुम्हारे साथ न रहतीं तो तुम आराम से रह सकतीं।'' यह अंकल बोला और मेरी समझ में तुरन्त आ गया कि दो का मतलब दादी माँ हैं और मैं हूँ। अंकल ओत्तो से सख़्त नफ़रत महसूस हुई और डर गई कि मम्मी क्या कहेंगी। मैं एकदम सन्न हो गई।

''ऐसा न बोलो।'' उसे कहते सुना ''सास बहुत मेहनती हैं, हाँ पुराने ढंग की रूमानी औरत है। लेकिन उससे निभ सकती है।'' और फिर ''राऊल।''

''जो हुआ सो हुआ, आज की सोचो।''

''तुम्हें तो मालूम है कि दूसरी समस्या ज़्यादा मुश्किल है।''

''हाँ, यह। रोसा, तुमने आख़िर यह क्यों किया?''

''मुझे तो कोई खास इच्छा नहीं थी, लेकिन राऊल ताने देता रहता था कि हमारा सिर्फ एक बच्चा है... तब तो देशभक्त का कर्तव्य था।''

''पता नहीं।'' ओत्तो बोला, ''तुम्हारे ऊपर बोझ है।''

मैं मन ही मन प्रार्थना कर रही थी कि वे आगे न बोलें, कि चले जाएँ। अचानक समझ गई कि मम्मी को मुझ से प्यार बिलकुल नहीं है और मैं भी उन लोगों से प्यार नहीं कर सकती। मैं उनके लिए बोझ हूँ। लेकिन मुझे मालूम नहीं इस बोझ का क्या मतलब है।

फिर रोशनी बुझ गई और मैं रो पड़ी क्योंकि मुझसे किसी को प्यार नहीं है। मम्मी से प्यार करना चाहती हूँ लेकिन मुझसे नहीं होता। दूसरी लड़कियों को अपनी अपनी मम्मी से प्यार है, मेरी तो मजबूरी है। जब बहुत छोटी बच्ची थी तो मम्मी से सारी दुनिया से बढ़कर प्यार था, लेकिन बीमारी के बाद सब कुछ बदल गया।

अच्छा अब तो मालूम है कि मम्मी को मुझ से ज़रा भी प्यार नहीं है। मैं तो सिर्फ इसकी वजह से पैदा हुई कि उनका सिर्फ एक बच्चा था। ज़्यादा बच्चे होना देशभक्त का कर्तव्य था। तो मैं पैदा हुई ताकि देशभक्त का कर्तव्य निभ जाए।

लेकिन अब मुझे सच में नहीं मालूम कि बुरा क्या करती हूँ, प्यार के योग्य क्यों नहीं हूँ। सुबह सवेरे उठती हूँ, कहीं घूमती फिरती नहीं हूँ, समाचार-पत्र लेने जाती हूँ, फिर झाड़ू देती हूँ, धूल पोंछती हूँ, थोड़ी देर तक खेलती हूँ या राऊल की छोड़ी हुई परीकथाओं की कोई पुस्तक पढ़ती हूँ, गर्मियों में कभी कभी दादी माँ के साथ नदी के किनारे जाती हूँ। कभी कभी नदी में नहाती हूँ, मिट्टी के किले बनाती हूँ।

मुझे बहते पानी की धारा देखने का शौक है। पानी बहता रहता है, कहीं नहीं

रुकता। कहाँ तक पहुँचता है, उसके किनारे कैसे हैं? यहाँ से भिन्न होंगे। वहाँ हरी वादियाँ और घास के मैदान होंगे जहाँ रात में जलपरियाँ नाचती होंगी और दिन में मेमने चरते होंगे। गले में घंटियाँ बँधी हैं और वोरेख़ नामक बड़ा कुत्ता उनकी रखवाली करता होगा। हाँ, उस कुत्ते का नाम वोरेख़ था।

''दादी माँ, वोरेख़ का क्या हुआ?''

''किस चीज़ का?''

''वोरेख़ हमारा जो कुत्ता था।''

दादी माँ ने कहा : ''छि, देखो, यह कमीज़ कितनी मैली है।'' कमीज़ लेकर नदी के पास चलीं, पत्थर पर खड़ी होकर उसे दुबारा धो दिया।

कमीज़ सच में मैली थी लेकिन मैंने देखा कि दादी माँ चौंक पड़ीं। चेहरा तमतमाया और ज़ोर से बोलने लगीं। वोरेख़ नामक हमारे कुत्ते की बात नहीं करना चाहती थीं।

रात को जब मम्मी और अंकल ओत्तो बाहर चले गए तो अचानक ख़याल आया कि दादी माँ शायद मुझसे उस कुत्ते का किस्सा जानबूझकर छिपाती हैं और न जाने क्यों छिपाती हैं लेकिन मुझे जानना चाहिए कि वोरेख़ का क्या हुआ था। दो एक दिन पहले मैंने ऐसा कोई कुत्ता देखा था और तब से मेरे दिमाग में है।

अगले दिन रविवार था, राऊल काम पर नहीं गया। मैंने उससे पूछा : 'सुनो राऊल, हमारे वोरेख़ का क्या हुआ?''

राऊल ने चौंककर जल्दी पूछा : ''किस वोरेख़ का? क्या होता, जो सारे सामान का हो गया, वही हो गया होगा, और क्या।''

लेकिन मुझे पता चला कि उसे नहीं मालूम कि वोरेख़ कुत्ता था।

शाम को अंकल ओत्तो के आने से पहले मैंने मम्मी से पूछा : ''मम्मी, हमारे वोरेख़ का क्या हुआ?''

''वोरेख़ क्या चीज़ है?'' मम्मी ने चौंककर पूछा, चेहरा तमतमाया और बोली : ''रहने दो, चाय बना रही हूँ''। यह तो मैंने देखा लेकिन यह भी देखा कि वोरेख़ से मम्मी का दिल नहीं लगा था, कि वोरेख़ का कुछ हो गया था जो मामूली नहीं था, इसकी बात नहीं करनी चाहिए अर्थात् मुझ से इसकी बात नहीं करनी चाहिए।

वैसे भी मुझे अकसर लगा कि बहुत सी बातें हैं जो मुझ से नहीं करनी चाहिए। मम्मी अकसर दादी माँ को कटाक्ष से देखती हैं, अंकल ओत्तो भी और अचानक खामोश हो जाते हैं और इसके बाद मामूली बातें करने लगते हैं कि इस साल आलू की फसल अच्छी नहीं हुई आदि।

हाँ सब मुझसे कुछ छिपाते हैं।

दादी माँ एक पुस्तक पढ़ती हैं जिसके आवरण पर सुनहरे अक्षरों में छपा है :

जी वी गेटे। मुझे मालूम है कि महान जर्मन लेखक था। एक दिन मैंने पुस्तक खोली और इसमें अच्छी कविता मिली :

''वन में घूमता हूँ एकदम अकेला
कुछ भी न ढूँढ़ना सपना है मेरा।''

कल दादी माँ पुस्तक अलमारी में रखना भूल गईं, मेज़ पर पड़ी रह गई। मैं पुस्तक को रैक में रखना चाहती थी। वह नहीं समा रही थी पीछे कोई चीज़ रखी हुई थी। मैं दादी माँ को आवाज़ देना चाहती थी, लेकिन अचानक मुझे लगा कि चुप रहकर उस चीज़ को निकाल लेना चाहिए।

निकाल ली। कोई चीज़ नैपकिन में लपेटी हुई थी। बहुत भारी थी अरे पिस्तौल।

मैं हैरान रह गई और अचानक समझ में आ गया कि अंकल ओत्तो की पिस्तौल है, जिसे वह आदेश के विपरीत छिपाए रखता है। यहाँ छिपाई है। यह पिस्तौल उसके दुश्मनों के ख़िलाफ़ है, शायद सब लोगों के ख़िलाफ़ है क्योंकि उससे किसी को प्यार नहीं है और सब लोग उसके दुश्मन हैं। यह तो उसका कहना है।

लेकिन नैपकिन में और कुछ लपेटा हुआ है। कोई फोटो। जीसस, यह तो अंकल ओत्तो है, किसी मोटे मुर्दे शहतीर का सहारा लिए खड़ा है जीसस, यह तो सूली है, इस पर दो लटके हैं। अंकल ओत्तो काली वर्दी पहने इनके सामने खड़ा मुस्कराता है। शायद रूसी होंगे। ये तो दुश्मन होंगे, क्योंकि हमारे खून के नाशक थे। ऐसा अंकल ओत्तो और मदर और अध्यापिका कहते हैं।

लेकिन भगवान, ये तो इतने बुरे नहीं हो सकते थे। उनके हाथ तो पीठ के पीछे बँधे हुए हैं। उन्होंने कोई बुरा काम नहीं किया होगा। फिर भी ओत्तो ने उनको मौत की सज़ा दी थी। एक बार मैंने मम्मी को मछली मारते देखा था। मछली मेज़ पर पड़ी दम तोड़ रही थी। उसे बस हवा और पानी चाहिए था, लेकिन मम्मी ने उसे हथौड़े से मार डाला। हाँ मछली है मछली, आदमी को कुछ खाना चाहिए लेकिन दूसरे जीव को जान से मार देना? अब मुझे मालूम हुआ कि ओत्तो बुरा आदमी है। फोटो के पास टिन का गोल-सा बिल्ला मिल गया, जिस पर लिखा हुआ था 'भगवान हमारे साथ है।'

यह वर्दी की पेटी का क्लिप था, हमारी फ़ौज का नारा। लेकिन उनके साथ भगवान नहीं हो सका।

काँपती हुई उन मुर्दों को देख रही थी। ये भी ज़मीन पर चलते फिरते थे और फिर दम तोड़ते मर गए थे। शायद उनके घर में भी ऐसी पुस्तक थी, इसमें कविता थी...अब मरी हुई मछलियों जैसे लटकते हैं।

दरवाज़ा चरमराया और मैंने जल्दी सब चीज़ें अलमारी में रख दीं। अचानक मुझे

लगा कि वह सुन्दर पुस्तक झूठ है झूठ। इसके पीछे कितनी डरावनी चीज़ें छिपती हैं।

सच कहाँ है?

शायद कहीं दूर, सात समुद्र पार। अंकल ओत्तो और राऊल और अध्यापिका लोक-कथाओं के बुरे प्राणी जैसे हैं। राऊल धूर्त लोमड़ी है। और मम्मी? मम्मी तो बर्फ की रानी है। आँखें शीशे की जैसी हैं। दुख की बात करो, उसे दुख नहीं होगा। हँसी मज़ाक़ करो, वह नहीं हँसेगी। बस कर्तव्य की बातें करती है।

कुछ दिन पहले मैंने पूछा : ''मम्मी, कर्तव्य क्या क्या है?''

''हमारा सबसे बड़ा कर्तव्य अपने को काबू में रखना है।''

''काबू मैं रखना कैसे?''

''भावना को, लेनि, भावना को काबू में रखना है, हमें महान होना चाहिए।''

''भावना होती तो महान न हो सकते, मम्मी?''

दादी माँ बीच में बोलीं, 'रोसा, क्या अपना यह घमंड छोड़ने का समय नहीं आया?''

''इसे घमंड न कहिए, माँ जी।'' मम्मी बोली, ''यह गर्व है।''

''पता नहीं।'' दादी माँ बोलीं, ''मेरे राऊल ने जब भी कुछ बुरा किया था तो क्षमा माँगी थी। घर में पुस्तकें थीं, वायलीन बजाता था, फूलदानों में पौधे थे। उसके अंग्रेज और फ्रेंच दोस्त उसे पत्रों में आदरणीय मित्र सम्बोधित करते थे। और तुम्हारा राऊल सब का बुरा करता है, पीटता है, जल्द ही गुस्से हो जाता है। किसी का आदर नहीं करता। ढोल बजाता है, सीटी बजाता है, किसी का कहना नहीं मानता। और देश मलबा ही मलबा है। ऊँची दीवार बनाने के लिए गहरी नींव चाहिए, रोसा। यह सीखना चाहिए।''

बर्फ़ की रानी कन्धे उठाकर बैठी रही।

अध्यापिका भी बुरी परी है।

कुछ भी करूँ या कहूँ, सब कुछ गलत है। जब कहना चाहती हूँ 'मैं जब छोटी बच्ची थी तो कहेगी : ''तुम्हें तब का क्या मालूम?'' उसे विदाई के लिए फूल देना चाहती थी तो कहा : ''सुबह आँख खोलते ही कहा करो मुझे अपने दुश्मन से नफ़रत है। बुरी परी की इच्छा है कि बच्चे उससे डरें।''

सिर्फ मेरी दादी अच्छी परी हैं। जो भी करें, छोटा-मोटा काम करें, कोई किस्सा सुनाएँ, नतीजा है खुशी, हँसी, खुशी, हँसी।

मैं दादी माँ जैसी होना चाहती हूँ। सिर्फ चाहती ही नहीं, मैं उनकी जैसी हूँ।

वे लोग चिल्लाते हैं हम, हम। लेकिन यह 'हम" कौन है? मुझे इस पर हँसी आती है।

मैं उन लोगों जैसी होना नहीं चाहती। मेरी एक बड़ी इच्छा है कि किसी दिन

कोई मुझे 'आदरणीया' कहे। जैसे पापा को कहते थे नहीं, उस दुबले पतले सुनहरे बालों वाले नीली आँखों वाले आदमी को जैसे। वह दादी माँ का बेटा था और फिर हुक्म मिलने पर वीरगति पाई।

ऐसी सोच रही थी लेकिन पुस्तकों की अलमारी देखने की भी हिम्मत नहीं थी। जब बहुत ज़रूरी था तो आँखें बन्द किए उसके पास से जल्दी गुज़री। वहाँ तो वह तसवीर है। गैस में जैसे दम तोड़ती हुई मछलियों की। जैसे एर्ना की मम्मी थी।

जीवन से बहुत डरती हूँ। अपने गद्दे पर लेट जाती हूँ, रज़ाई ओढ़ती हूँ। रात है, सिर्फ घड़ी टिक-टिक करती बताती है कि दस साल की लेनी फ्राइवल्द को आगे भी बहुत बुराई देखनी है।

2

अब उच्च विद्यालय की कक्षा एक में पढ़ती हूँ।

नया अध्यापक है। लम्बे कद के हैं, चेहरा सुन्दर है। बाल काले हैं और चिल्लाते नहीं हैं। धीमे बोलते हैं और कुछ सोचकर मेरे बेंच के सामने रुक जाते हैं।

''लेनि, तुम अकेली क्यों बैठी हो? उधर एक ही बेंच पर तीन लड़कियाँ बैठी हैं। लेनि, तुम पहली बेंच पर बैठो।"

टोनी मेरे पास बैठ गई। मुझे अच्छा लगा। लेकिन जब तक अध्यापिका थी, तो टोनी मुझ पर ज़रा भी मुस्कराती नहीं थी। मास्टर जी बाउम भी मुस्कराते हैं। उन्होंने मेरे बाल पर हाथ फेरा। उस दिन उन्होंने हमें बताया कि युद्ध कितना भयानक था और इसमें कितनी जानें गईं। उन्होंने नहीं कहा कि उन लोगों ने वीरगति पाई थी। उलटे कहा कि एक मूर्ख सपने पर बलिदान हुए थे।

अन्नेलोरे गुस्से हो गई। जब क्लास ख़त्म हुआ तो चीखने लगी कि मास्टर जी ने गलत बात कही। कुछ लड़कियाँ कहने लगीं कि अध्यापिका उनसे अच्छी थी।

घर जाते समय टोनी ने मेरा हाथ पकड़कर कहा : ''परवाह न करो, उनकी बातें अनसुनी करो। मुझे मास्टर जी से प्यार है।"

मुझे भी मास्टर जी से प्यार है। उन्होंने मेरी तारीफ़ भी की। मुझे तीन गाने सुनाने थे। सुनकर वे बोले : ''तुम्हें नियमित रूप से गाना-बजाना सीखना चाहिए। घरवालों से कहो।" कहना आसान है, करना मुश्किल। कुछ कहूँ तो मम्मी या तो जवाब नहीं देगी या कहेगी कि लाड-प्यार से बिगड़ गई हो और ठोस जीवन के लिए तैयार होना चाहिए।

छिः, मुझसे ये सब शब्द अब सुने नहीं जाते : ठोस ज़िन्दगी, कड़ी मेहनत, जर्मन लड़की का कर्तव्य। और जो मुझे पसन्द नहीं है इस सब कुछ की तारीफ़। जैसे : मैं फ़र्श पर सोती हूँ। हमारे पास बहुत कम बर्तन बचे हैं, सब कुछ मिला हुआ सूप

खाते हैं और फिर ये बातें कि युद्ध का ज़माना सबसे अच्छा ज़माना था। युद्ध तो सच में सबसे भयानक चीज़ है, क्यों कि हमारा अच्छा घर मलबा बन गया था और एर्ना की मम्मी...

जब अध्यापिका बताती थी कि जर्मन कितने महान होते थे और कितने दुश्मनों को ख़त्म कर दिया था तो मुझे सच में दुख होता था और ऐसा सोचती थी कि ऐसे करना बहुत गलत था। दूर देशों में घुसना क्या ज़रूरी था। एक दिन पीछे के कमरे में रूसी बच्ची का खेल खेला। ऐसा खेला कि जर्मन आ गए और मेरी मम्मी को मार डाला। वह चीखती चिल्लाती थी कि मुझे जीने दो मेरी बिटिया है। और उन लोगों ने उनको मार डाला।

मुझे मालूम नहीं था कि रूसी महिला कैसे चिल्लाई, तो मैंने अपनी भाषा बना ली : ''मुगुझेगे जिगीनेगे दोगो" और रो पड़ी। तब राऊल कमरे में घुस गया और मुझे बहुत डाँट दी। चिल्लाया : ''मैं तुझे खूब पिटवाऊँगा, हरामज़ादी कहीं की।" मैंने दादी माँ से पूछा कि हरामज़ादी क्या गाली है। दादी माँ ने सिर्फ यह जवाब दिया कि रहने दो, राऊल को रफ ता-रफ ता अक्ल आ जाएगी। माँ ने मुझे झिड़क दिया कि कोई भी ज़रा सी बात को लेकर क्यों रोती हूँ।

हाँ मैं अकसर रोती हूँ, लेकिन हँसने की कोई बात नज़र नहीं आती। उस रूसी महिला और बच्ची पर बड़ा अन्याय हुआ था।

अध्यापिका ने हमें बताया था कि रूसी लोग सबसे बुरे हैं, लेकिन वह तो किसी रूसी को नहीं जानती तो उसे क्या मालूम है।

दादी माँ ने मेरे लिए लकड़ी के बक्से का अच्छा घरौंदा बनवाया। छोटी डिबिया का घर का सामान स्वयं बनाया। इससे खेलती हूँ।

एक दिन मम्मी को मालूम नहीं था कि मैं घर पर हूँ। वह डाकघर से दौड़ी आई और दरवाज़ा बन्द करते ही दादी माँ से धीरे से कहा : 'मुसीबत आ पड़ी, होर्स्त की वजह से बरगर परिवार के सिर पर आफ़त पड़ी।"

दादी माँ हैरान होकर फुसफुसाई : ''धीरे बोलो, रोसा, लेनी सोफे के पीछ खेल रही है।"

अच्छा, मेरे सामने यह नहीं कहना चाहिए कि बरगर परिवार होर्स्त की वजह से परेशान है। मम्मी थोड़ी देर तक बस खामोश बैठी रही, फिर लम्बी साँस लेकर गुस्से से बोली : ''वह शैतान का धक्का हो गया था। यह आफ़त राऊल की आदर्शवादिता का फल है।"

''क्या उन लोगों को मालूम है?"

''भगवान न करे लेकिन उनको पता चल सकता है। मिसेज़ बरगर को अमरीकी आफिस का सामान मिला। होर्स्त का किस्सा ख़त्म हुआ।"

किस्सा कैसे ख़त्म हुआ? आज ही होर्स्त मिल गया, बिलकुल ठीक था, हँस रहा था, मुझे आवाज़ भी दी। होर्स्त अच्छा लड़का है। और अब उसको क्या हुआ? मिसेज़ बरगर को क्या सामान मिला?

"फिर?" दादी माँ ने पूछा।

मम्मी बोली : "उसने वहाँ बताया कि लड़के की रिपोर्ट देनेवाले थे, पहले पता नहीं था कि रिपोर्ट देनी है। मिसेज़ बरगर बहुत परेशान है और उसका शौहर ताने देता है कि होर्स्त की रिपोर्ट वह देना चाहता था, लेकिन बीवी ने ऐसा करने नहीं दिया।"

"तुम डरती हो, रोसा?"

स्पष्ट था कि मम्मी बहुत डरती है, लेकिन मेरी समझ में कुछ नहीं आया।

फिर एक दिन मैंने देखा कि किसी अमरीकी ने बरगर की घंटी बजाई। ऐसा अकसर नहीं होता। दरवाज़ा खुल गया, वह अन्दर गया। मैंने इन्तज़ार किया लेकिन वह बहुत देर तक बाहर नहीं निकला।

आज सुबह नाश्ता करते मम्मी ने अचानक कहा : "तो होर्स्त एक हफ्ते बाद जाएगा।"

जाएगा? कहाँ जाएगा?

दादी माँ लम्बी साँस लेकर बोली : "यही होना था। वह तो भगवान के ख़िलाफ़ हुआ था।"

"पहले हमारे शहर में ऐसा कभी नहीं हुआ था।"

"मेरा नया जर्मन धर्म है, माँ जी। आपका भगवान कौन है, नहीं जानती।"

अंकल ओत्तो शाम को बहुत परेशान आया। इधर-उधर घूमता था और बार-बार कहता था : "मुझे तो इस मामले में उलझना नहीं। नाजुक मामला है, बहुत नाजुक।"

रात में दादी माँ और मम्मी समझती थीं कि सो रही हूँ। मैं सुन रही थी।

दादी माँ फुसफुसाई : "रोसा, रिपोर्ट करे।"

"अब तो देर हो गई।" बर्फ़ की रानी बोली, "पहली अवधि वर्ष के अन्त तक थी, फिर दो हफ्ते बढ़ाई गई। बरगर बिलकुल हार गए।"

"क्या जेल की सज़ा मिलेगी?"

"पता नहीं। अभी वकील की तलाश में हैं।"

"लेकिन रोसा, वे चीज़ें घर से हटानी हैं। अगर तुम ओत्तो से न कहो तो मैं खुद इन्तज़ाम कर दूँगी।"

"क्या अलमारी में हैं?"

"पुस्तकों की अलमारी में। अगर घर की तलाशी हो तो आसानी से मिल जाएँगी।"

"इसकी तो कसर रह गई।"

"हाँ युद्ध है युद्ध। लेकिन किसी को समझाना मुश्किल है।"

यह किसने कहा? मेरी दादी माँ ने। तो उन्हें सूली पर लटकती "मरी हुई मछलियों" का पता है। यह सब कैसे समझूँ?

"किसी दिन मैंने छोटा-सा तालाब देखा था। सतह पर हथेली जैसे चौड़े पत्ते तैरते थे, हर हथेली पर फूल खिला था। मैं तालाब के पास दबे पाँव चली, कहीं जल-परियों को न चौंकाऊँ और जल-पुरुष को गुस्सा न दिलाऊँ।"

दबे पाँव चल रही थी और अचानक मतली हो गई। कितनी बदबू। पानी शायद सड़ता था और वह सब जो मुझे इतना सुन्दर लगा था कितना खराब निकला।

अच्छा उन्होंने 'मरी हुई मछलियाँ' देखकर भी कहा कि युद्ध है युद्ध।

आगे बातें कर रही है : "लेनी की उस अटैची का क्या हुआ? क्या अब तक तुम्हारे पास है?"

"अटारी में पुरानी अलमारी में पुराने कबाड़ में पड़ी हुई होगी। तो क्या हुआ, मामूली अटैची, कब से खाली पड़ी है।"

अच्छा, लेनी की अटैची। तो मेरी कोई अटैची है। कब से खाली पड़ी है? लेकिन पहले उसमें ज़रूर कोई सामान था। चुपचाप, सिर्फ दिल की धड़कन सुनाई दे रही है और कलाई में छोटी नीली नस फड़क रही है ऊपर नीचे।

"और वह सामान?"

"ज़्यादातर लोगों में बाँट दिया।"

"यह तो अच्छा है। मुझे चिन्ता थी। सावधानी से बढ़कर कुछ नहीं है।"

"ठीक है। बस कहीं मिसेज़ बरगर कुछ न...ओत्तो का कहना सही है।"

मैं बिलकुल खामोश लेटी हूँ, लेकिन दादी को मेरी साँस सुनाई देती है। आवाज़ दी : "लेनि।"

"क्या नहीं सो रही है?"

"सो रही है।"

फिर सन्नाटा छा गया।

सुबह अटारी की तरफ दौड़ी, लेकिन दरवाज़े पर ताला लगा हुआ था। ऐसा शायद हमेशा होता है।

स्कूल में अब हालत बिलकुल दूसरी है। मास्टर जी फ़ासिस्ट-विरोधी हैं। उस दिन बोले : "बच्चो, हमारी मातृभूमि सुन्दर और धनवान होती थी। हमारे बहुत भद्र और बुद्धिमान लोग थे। लेकिन हमने बहुत से बुद्धिमान और भद्र लोगों को मरने दिया।"

अन्नेलोरे ने हाथ उठाया : "मास्टर जी। सुना है कि बुरे लोग हम लोगों को

नीचा दिखाने के वास्ते हमारी बुराई करते हैं। हमसे क्रूर विश्वासघात किया गया था, हमें नुकसान पहुँचाया गया था।''

मास्टर जी बोले : ''इसका विश्वास न करो, अन्नेलोरे। सच्चे हाल की अनदेखी कायर करते हैं। मैंने खुद अपनी आँखों से बहुत बुरा देखा था, जो हम लोगों ने किया था। बुरा काम बेवकूफ़ी की वजह से भी हो जाता है। या किसी कमी की वजह से। अक्ल की कमी या भावना की कमी या इच्छाशक्ति की। यह किसी दिन तुम्हारी समझ में आएगा।"

जब घर आई तो किसी ने घंटी बजाई। मैंने तुरन्त दरवाज़ा नहीं खोला लेकिन घंटी बजती रही। दरवाज़े के पास आकर मैंने पूछा कौन है?

''हूँ मैं।" कोई बोला, ''स्थानीय अधिकार सम्बन्धी कमान।"

मैं डर गई, लेकिन कोई चारा नहीं था। दरवाज़ा खोला, अमरीकी था। उसने तुरन्त पूछा :

''आप बेटी मिसेज़ बरगर?"

''नहीं, फ़ौजी साहब।" मैंने जवाब दिया, ''मिसेज़ बरगर पड़ोस में रहती हैं, लेकिन घर पर नहीं होंगी। शायद कहीं चली गई हैं, अरसे से उन लोगों में से कोई नज़र नहीं आया।"

''मिसेज़ बरगर न गया, लड़का घर। और मैं मिसिज कहना ज़रूरी बहुत, लड़का लिए कुछ करना। हाँ मैं गया। चारा नहीं। सोचा वह यहाँ।''

अचानक मुझे उसका चला जाना अच्छा नहीं लगा। उसकी बोली कितनी मज़ेदार थी। छोटे बच्चों की बोली जैसी। तो मैंने इसी बोली में पूछा : ''होर्स्त घर?"

''हाँ।" वह बोला। फिर जल्दी चला गया। मुझे सुनाई दिया कि नीचे के दरवाज़े पर मम्मी मिल गई। कुछ बातें हुईं। फिर मम्मी जल्दी ऊपर आई, आते ही पूछा : ''क्या अमरीकी इधर आया था? क्या तुमसे कुछ पूछा? तुमने उसे क्या बताया? क्या चाहिए था?"

मुझे शब्द-शब्द बताना पड़ा, उसके हकलाने की भी नकल की। मैंने समझा कि मम्मी उसकी अजीब बोली सुनकर हँसेगी। लेकिन वह मुस्कराई भी नहीं और सिर हथेलियों में पकड़ कर पूछा : ''क्या ठीक-ठीक समझीं कि उसने मिसेज़ बरगर और उनकी बेटी को पूछा?"

''जी हाँ।"

फिर मम्मी ने पूछा कि मेरी पढ़ाई कैसे चलती है। पहले कभी ऐसा नहीं पूछा। मैं खुशी से सब कापियाँ ले आई तो मम्मी को ताज्जुब हुआ। ''अरे लेनि, तुम्हारी लिखावट बहुत अच्छी है और अंक भी अच्छे मिले हैं। तो इस साल की रिपोर्ट पिछले साल से अच्छी होगी न?"

मेरे दिमाग में ख़याल अया कि अगर पढ़ाई में प्रथम आती तो शायद माँ पर बोझ न होती।

फिर अंकल ओत्तो आया। कोई बड़ा बक्सा ले आया, सीधे कमरे में गया।

अचानक राऊल घुस आया। ''क्या वह बदमाश आया है?" पूछा।

''कौन? अंकल ओत्तो? आया है। लेनि, अपनी आपबीती के प्रमाण यहाँ छिपाता है। हमारे घर में कितना कबाड़ रखा है, तुम्हें नहीं मालूम? तमगे, पिस्तौल, न जाने क्या-क्या। पहले नाज़ी था, अब अमरीकी अफ़सरों की चापलूसी करता है। बड़ी दोस्ती निभाता है।"

अचानक कमरे से शोर सुनाई दिया। कोई बहुत भारी चीज़ फ़र्श पर गिर पड़ी और दो तमाचों की आवाज़ आई। कराहने की भी आवाज़ आई। माँ के कराहने की।

राऊल मुझे कमरे में घसीट ले गया। माँ फ़र्श पर से उठ रही थी, बड़ा बक्सा फ़र्श पर पड़ा हुआ था और आसपस चाँदी की चम्मचें बिखरी हुई थीं। बहुत चम्मचें। सब पर उत्कीर्ण किया हुआ शब्द : ''लाल गरूड़"।

''चोर कहीं का। बदमाश। तो तूने यहूदी सीसलंड के होटल में चोरी की। अब तो हमें प्रमाण मिल गया, मुझे और मेरी बहिन को।" राऊल चीखा।

ओत्तो ने कहकहा मारा : ''यह तो अच्छी रही, राऊल। तुम्हें प्रमाण मिला। तुम्हें और तुम्हारी बहिन को। ज़रा जबान सँभालो।''

वह सोफे पर लेटकर शान्ति से बोला : ''सुनो राऊल, ज़माना बदल गया है। एक मामूली शब्द बहन। बरगर परिवार के ख़िलाफ़ बच्चे के अपहरण का मुकदमा चलेगा। तफसीली सुननी है तो सुन सकते हो। बहुत भारी मामला है। लाल गरुड़ की चम्मचों से कहीं भारी।"

और दुबारा कहकहे मारने लगा। आदमख़ोर।

मम्मी मेज़ का सहारा लिए खड़ी थी, उसकी साँस टूट रही थी, आँखों से गुस्से की आग की ज्वाला लपलपा रही थी। बोलीं : ''राऊल, तुमने यह क्यों किया?"

राऊल बोला : ''मदर, क्या अंधी हो? मुझे इसके काले धंधों से कितनी नफ़रत है। पी.एस. में आख़िर क्या करता रहता है?"

पी.एस. अमरीकियों का डिपार्टमंटल स्टोर है। जर्मनों का वहाँ प्रवेश मना है। वहाँ क्या-क्या मिलता है। फल, चकलेट और सिगरेट, चमत्कार! राऊल के दोस्त वहाँ इधर-उधर घूमते-फिरते हैं। अन्नेलोरे और उसकी सहेलियाँ भी। अमरीकी चकलेट और सिगरेट के टोटे ज़मीन पर फेंकते हैं, बच्चे समेटते हैं। छिः।

मम्मी बोली : ''ओत्तो सिर्फ वह लेता है जो उसके दोस्त देते हैं। और यहूदी सम्पत्ति ओत्तो का अधिकार है।"

''ओत्तो नीच मुनाफाखोर है। उसमें जर्मन गर्व नहीं है। तुम्हारे सामने नाज़ी

बनता है, जोन्नी के सामने जनवादी।"

राऊल तमाशा करता रहता है। इस समय सच्चरित्र बनता है। जाते समय एक गाने की सीटी बजा रहा था "मेरा एक दोस्त था।" इस गाने के माने हैं कि हिटलर से प्रेम करता है।

मैं दरवाज़े के पास खड़ी रही। मदर ने पास आकर एक तमाचा जड़ दिया, फिर दूसरा तमाचा। मैंने खूब मार खाई। फिर उसे राहत मिली।

आदमख़ोर एक हफ्ते तक नहीं आया। दिसम्बर शुरू हुआ। मम्मी ने कोई लम्बा पत्र लिखा और आज सुबह कहा : "यह चिट्ठी होटल सुनहरा चकोर में दे दो।"

लिफ़ाफ़े पर लिखा हुआ था : "श्री ओत्तो कीलर" आदि।

नाश्ते के बाद राऊल चिट्ठी मुझसे लेना चाहता था। मैं नहीं दे रही थी लेकिन उसने मुझे मजबूर किया। और पूछा : "इस पत्र के बदले में मुझसे क्या लोगी?"

मैंने अटारी की चाबी माँगी।

फिर वह पत्र लेकर भाग गया। मैं बहुत परेशान थी।

मास्टर जी ने प्रस्ताव किया कि सैंट निकलाउस का दिन मनाया जाए जैसे पहले मनाया जाता था। तब पत्र को भूल गई। एक हफ्ते बाद मनाया जाएगा। कितना अच्छा रहेगा। मारिआ निकलाउस बनेगी क्योंकि सबसे लम्बी है। मास्टर जी ने अन्नेलोरे को शैतान नियुक्त किया। फिर बोले : "फ़रिश्ता लेनी बनेगी। शान्त लड़की है और अच्छा गाती है।"

मेरा दिल खुशी से धड़क रहा था। अन्नेलोरे भौंहें सिकोड़े बैठी थी और उसकी सहेलियाँ इशारे कर रही थीं।

शाम को राऊल ने मुझे गैलरी में बुलाकर हाथ में चाबी थमा दी।

"क्या तुम ने चिट्ठी दी?"

"और क्या।"

भगवान, कितनी खुशियाँ एक साथ हुईं। फ़रिश्ता बनूँगी और अटारी की चाबी मिली। अब मेरे गले में लटकती है।

सुबह आठ बजे दादी माँ गिरजे चली गईं, राऊल किसी मीटिंग में और बर्फ़ की रानी फिर कोई पत्र लिखने बैठ गई। मैं जल्दी सीढ़ियाँ चढ़ी। चाबी घूम गई, दरवाज़ा खुल गया। बाईं तरफ चिमनी है, इधर-उधर कपड़े सुखाने की रस्सियाँ हैं उधर पुरानी अलमारी है और इसके ऊपर घिसी हुई अटैची। क्या यह मेरी अटैची है? मुझे याद नहीं कि मेरे पास कभी कोई अटैची थी, लेकिन वे सब ऐसा कहते हैं तो यही अटैची होगी।

देखती, देखती रही और अब मुझे इतनी अनजानी नहीं लगी। हाँ, कभी इसे देखा था। जानी पहचानी है। अलमारी पर से उतार ली। एकदम खाली नहीं थी, कोई चीज़

इसमें थी। लेकिन नहीं खुली ताला लगा हुआ था। तब तो अटारी में पहुँचने से कोई फ़ायदा नहीं।

अरे, कोई आनेवाला है। अटैची हाथ में पकड़े जल्दी चिमनी से सटकर खड़ी हुई। अचानक याद आया कि इसी तरह से हाथ में अटैची लिए किसी दीवार से सटकर खड़ी थी। किसी जगह देर तक खड़ी किसी का इन्तज़ार किया था। हाँ, मदर का इन्तज़ार। वह आई थी और सफेद कपड़े पहने महिला ने उससे कुछ कहा था, पता नहीं क्या और फिर उस 'तीन लीपावाले' घर में चलीं। हाँ, यह सब मेरी बीमारी के बाद हुआ था। मुझे अस्पताल से छोड़ा गया था। दादी माँ ने कहा था कि मुझे तब स्कारलेट ज्वर था, लेकिन जब मुझे पिछले साल खसरा निकल आया था तब डॉक्टर ने पूछा था क्या कभी स्कारलेट ज्वर हो गया था तो मम्मी ने कहा कि नहीं था। तो मुझे कुछ नहीं मालूम।

काश कि यह अटैची खोल सकती, शायद इसमें कुछ खिलौने मिल जाएँ। हैंडल के नीचे टिन की लम्बी सी लेबल है, इस पर लिखा हुआ है Made in Czechoslovakia। नहीं, यह अटैची यहाँ नहीं छोड़ती। अपने पास रख लूँगी। काश कि खोलकर देख सकती।

जल्दी अटारी से निकलकर दरवाज़े का ताला लगाकर नीचे दौड़ी। सब चले गए थे, बहुत अच्छा। कमरे में ओवन में रख दिया। ओवन में अब आग नहीं जलाई जाती है और दादी माँ कहती हैं कि इसमें अब कभी आग नहीं जलेगी। कोयले जो नहीं हैं।

सिर्फ टोनी को बताऊँगी। यह तो मेरी सहेली है।

थोड़ी देर बाद अंकल ओत्तो आया, थोड़ा लड़खड़ा रहा था लेकिन मुस्करा रहा था।

जब उस दिन अध्यापिका ने कहा था कि नाटक खेलना मेरी नस-नस में है तो मुझे मालूम नहीं था कि नाटक रंगभूमि के बिना भी खेला जा सकता है। अब तो मालूम है। बर्फ़ की रानी से बातें करने वाला ओत्तो एक है। दूसरा ओत्तो अमरीकियों का इन्तज़ार करता है और तीसरा ओत्तो मौत की सज़ा देने वाला है। दूसरे लोगों के भी दो-तीन चेहरे होते हैं। दादी माँ के भी।

अंकल ओत्तो बोला : "लेनि, तुम अच्छी लड़की हो।" पता नहीं ऐसा क्यों बोला। उसकी आँखें चमक रही थीं।

फिर उसे हिचकी आई और साँस में बदबू थी। काश कि घरवाले घर आते, लेकिन कोई नहीं आया। तो मैंने पूछा : "क्या आपको चिट्ठी मिली?"

"क्या चिट्ठी, बोलो।"

"मम्मी की। मुझे जाकर आपको देनी थी। लेकिन राऊल ने मुझसे ली और कहा कि जाकर खुद देगा। मुझे तो थोड़ा अजीब लगा लेकिन...प्लीज़ मम्मी को न बताइए

नहीं तो मेरा बुरा हाल होगा।"

"अच्छा।" बोला, "मुझे उस चिट्ठी का इन्तज़ार था। अजीब लगा कि नहीं आई। तो तूने चिट्ठी नहीं दी, तू स्लावनिक हरामज़ादी। तुरन्त मार खाएगी।" मेरे बाल पकड़कर मुझे मारना शुरू किया। बहुत देर तक मारता रहा और दुहराता रहा : "तू स्लावनिक हरामज़ादी।" मेरी नाक से खून बहने लगा। जब गलियारे से कदमों की आहट सुनाई दी तो आदमख़ोर मुझे छोड़कर हाँफता हुआ पलँग पर गिर पड़ गया।

"श्रीमती जी।" बोला, "लेनी को कड़ी सज़ा मिलनी चाहिए। इसे मुझे पत्र पहुँचाना था लेकिन इसने खोलकर फेंक दिया।"

दादी माँ ने देखा कि मैं रुआँसी हूँ। खून से लथपथ हूँ और काँप रही हूँ।

"लेनी से बहुत बुरी गलती हो गई, हाँ। लेकिन आप तो बहुत थक गए। थोड़ी देर के लिए लेट जाइए न।"

आदमख़ोर हामी भरकर पलँग पर गिर पड़ा और खर्राटे भरने लगा। दादी माँ मेरा हाथ पकड़कर रसोई में ले गईं। वहाँ मेरा चेहरा हथेलियों में लेकर फुसफुसाईं उसने तुम्हें क्या किया?

"बहुत मारा। शायद मार डालना चाहता था। और मुझे स्लावनिक हरामज़ादी की बहुत गाली दी।"

दादी माँ बिलकुल सिमट गईं और उनकी आँखों में बहुत दुख था। मुझे उन पर तरस आया। उनके चेहरे पर मोटे आँसू बह रहे थे। हाथ जोड़कर बोलीं भगवान, हमें मुक्त करो।

मैं समझ गई कि आदमख़ोर से मतलब है।

पता नहीं मुझे क्या हो रहा था, अचानक और भी काँपने लगी। अब जाकर बड़ा डर लग गया। और यह डर बढ़ता जा रहा था।

दादी माँ ने मेरी बदली हुई शक्ल देखकर मुझे पुराने सोफे पर लिटाया। आगे कुछ भी नहीं मालूम, शायद गहरी नींद आ गई। जब आँख खुल गई तो मम्मी और राऊल मेरे पास बैठे थे। राऊल बोला : "देखो होश में आ रही है। ताकती है, जड़बुद्धि जैसी शक्ल है। देखो।" मम्मी ने लम्बी साँस ली : "मुझे तो चिंता थी कि कहीं कोई झमेला न हो, इसी की वजह से।"

"शैतान इसे होर्स्त के पास ले जाता तो अच्छा होता।"

दादी माँ ने मुझे चाय पिलाकर कहा : "अब सो जा, मुन्नी।" यह कहना ज़रूरी भी नहीं था। सारे बदन में दर्द था, आँखें बन्द कर लीं। सिर पर ठंडी पट्टी थी। दादी माँ का कहना सुनाई दिया : "सुनो, रोसा, मेरे दिल की बात। वह आदमी..." सुबह स्कूल नहीं गई। सारा बदन जल रहा था, बुखार था। सोफे पर लेटी रही। दादी माँ ने मुझे लोक-कथा सुनाई और साथ ही आलू का सूप बनाती रही। फिर आदमख़ोर

की लाई हुई समुद्री मछली भूनेंगी। "दादी माँ, मैं मछली नहीं खाऊँगी।"

"न खाओ। मैंने भी सोचा था कि आज मछली तुम्हारे लिए ठीक नहीं रहेगी। तुम्हारे लिए आलू का भुर्ता बनाऊँगी।"

मैंने कुछ नहीं कहा क्योंकि यह बात नहीं है कि मछली मेरे लिए आज ठीक नहीं है । बात यह है कि मछलियों से डरती हूँ क्योंकि लेकिन दादी माँ नहीं समझ पाई। अच्छी हैं, लेकिन उनके भी दो चेहरे हैं। कभी कुछ कहती हैं, कभी कुछ। आख़िर शायद यह भी कह सकतीं थीं कि 'वे तो दुश्मन थे'। वह नहीं जानती जो मैं जानती हूँ। मैंने तो 'मरी हुई मछलियों' का खेल खेला था।

मम्मी के आफिस चले जाने के बाद राऊल बोला : 'लेनि, तुम अच्छी लड़की हो। तुमने आख़िर अंकल जी को घर से निकलवा दिया। दादी माँ ने उसे खूब डाँट दिया, अब माँ कुछ नहीं कर सकती। हाँ, तुम्हारे साथ धीरज रखना पड़ता है, यह तो ठीक है। लेकिन तुमने अंकल ओत्तो को निकलवा दिया, शाबाश। अच्छी लड़की हो, "और कहकहा मारा। अब बताओ, कहाँ जा रहा हूँ। नहीं मालूम? अंकल ओत्तो के पास उसका सारा सामान पहुँचाना है।" फिर चला गया।

तो अंकल से पीछा छुड़ाया लेकिन मम्मी को उसी दिन से मुझसे बिलकुल नफ़रत है।

उस दिन टोनी मुझे देखने आई। पूछने आई कि क्या बुध के दिन स्कूल आऊँगी और बताया कि फ़रिशता बनकर 'देखो पवित्र रात की ज्योति' गाना सुनाना होगा। दादी ने कहा : "मास्टर जी को बताओ कि लेनी को कल तीसरे पहर ले आऊँगी, इसकी तबियत अच्छी हो रही है।"

फिर अकेले में मैंने टोनी से कहा : 'तोनि, दिल दूसरी दुनिया पहुँचने को चाहता है।"

टोनी ने पूछा : "क्या मतलब?"

"मेरा विचार है कि कहीं एक और दुनिया है जैसे लोक-कथाओं में होती है। वहाँ रोशनी, गर्मी और खुशबू होगी, लोग मुस्कराते होंगे।"

टोनी ने आपत्ति की : "मेरा तो विचार है कि इस दुनिया में भी कहीं रोश्नी और गर्मी होगी और लोग मुस्कराते होंगे।"

"तोनि, मैं तुम से एक रहस्य खोलूँ। मुझे अटारी में एक अटैची मिल गई और उसमें सुन्दर चीज़ें हैं। लेकिन ताला लगा हुआ है और चाबी मेरे पास नहीं है।"

"अन्दर क्या है?"

"बड़ा नीला फीता है और गुड़िया है, कागज़ की नहीं, वास्तविक गुड़िया। और फिर सन्तरा है। तोनि, कमरे में जाकर ओवन में देखो। उस ओवन में आग अब कभी नहीं जलेगी।"

टोनी अटैची ले आई।

''बुरी बात यह है कि इसकी चाबी नहीं है, लेकिन हमारे घर तरह-तरह की चाबियाँ पड़ी हुई हैं। निकलाउस मनाने के बाद ये चाबियाँ लेती आऊँगी और देखा जाएगा। ठीक है?"

टोनी ने अटैची ओवन में वापस रख दी। मैंने कहा : ''तोनि, क्या मेरी सच्ची सहेली बनना चाहोगी?"

''और क्या!"

''सुनो तोनि, मेरा दिल कभी कभी बहुत घबराता है।"

''क्यो?"

''इसलिए कि मेरी नज़र दूसरों की नज़र से अलग है। सब खुशी मनाते हैं तो मेरे लिए सब कुछ बराबर है। जब नाराज़ होते हैं तो मुझे लगता है कि फालतू है। स्कूल की लड़कियाँ हम दोनों से नफ़रत करती हैं तो मेरे लिए बराबर है। मानो मुझे इस सबसे कोई मतलब नहीं।"

''और तुम्हें किस चीज़ से मतलब है?"

''गानों से, नदी से, फूलों से और अपने सपनों से और तुम से। सब कुछ से जो यहाँ नहीं है लेकिन कहीं और ज़रूर है। ज़रा यरमीला दे दो।"

फिर देर तक कागज़ की गुड़िया यरमीला देखती रही। टोनी को अचरज हुआ कि इसमें क्या है।

''निकलाउस के दिन तुम्हें पता चलेगा कि यह गुड़िया कौन है। ठीक है? एक चिट्ठी से पता चलेगा।"

मास्टर जी ने फैसला किया था कि आपस में उपहार नहीं देंगी क्योंकि बाज़ार में वैसे भी कुछ नहीं मिलता। सिर्फ छोटी चिट्ठियाँ बाँटी जाएँगी।

फिर टोनी को घर जाना पड़ा। घरवालों से बात करने का मेरा मन नहीं था। मन ही मन गाना गा रही थी ''देखो पवित्र रात की ज्योति।"

कल, कल फ़रिश्ता बनूँगी।

सुबह नाश्ते के समय मैंने यूँ ही कहा : ''दादी माँ, तीसरे पर जब फ़रिश्ता बनूँगी तो वह छोटी टोकरी साथ लूँगी और लड़कियों की चिट्ठियाँ इसमें रखूँगी, ठीक है?"

''हाँ, हाँ।"

मम्मी बोली : ''बस कि कहीं टोकरी न टूट जाए।"

मेरा मन था कि सबको फ़रिश्ता बनने के बारे में बताऊँ, लेकिन वे उठकर चले गए। दादी माँ मेरे लिए लम्बी सफेद कमीज़ पर इस्त्री करने लगी। बोली : ''अब आगे इस्त्री कैसे करेंगे जब गैस नहीं आती न बिजली, और कोयले भी नहीं हैं।"

फिर मुझे कमीज़ पहना दी और सिर पर फ़रिश्ते वाली सुनहरी पट्टी बाँधी और मैंने वही गाना सुनाया।

दादी माँ रो पड़ीं, आँसू उनके पेशबन्द पर गिर रहे थे। बोली : ''मुन्नी, काश कि तुम्हारे माता-पिता तुम्हें देख सकते।"

अचानक राऊल घुस आया और चीखने लगा : ''हाय हा। फ़रिश्ता आसमान से उड़ता आया, गू पर गिर पड़ा।" फिर बोला : ''वह टीचर कितना मूर्ख है। दुनिया टूट गई है और हम बदले के बजाय फ़रिश्तों का खेल खेलेंगे।"

''राऊल, बच्ची का थोड़ा लिहाज़ करो और बूढ़ों की इज़्ज़त।"

''अरे अन्तिम क्रिया की बातें।" कहकर ''झंडा उठाओ।" हिटलरवाले गाने की सीटी बजाने लगा, लेकिन मेरा मूड खराब नहीं हुआ।

तीन बजे दादी माँ और मैं स्कूल आ गईं। मास्टर जी ने अच्छा स्वागत किया। हमारी कक्षा खूब सजी हुई थी। उत्सव शुरू हुआ। निकोलस ने अच्छे को इनाम और बुरे को सज़ा मिलने की अच्छी कविता सुनाई और कहा कि इस कविता की दुनिया में सबके लिए जगह है, सब मित्र होकर जी सकते हैं और एक-दूसरे की इज़्ज़त करनी चाहिए।

फिर शैतान ने एक घमंडी की कविता सुनाई। घमंडी समझता था कि उससे बढ़कर कोई नहीं है। सुनकर सब को हँसी आई, अन्नेलोरे ने बहुत अच्छी तरह से कविता सुनाई। उसका दिमाग बहुत तेज़ है लेकिन बहुत चीखती है। फिर मेरे गाने की बारी आई। मैं मन ही मन यहाँ से कहीं दूर पहुँची, जहाँ रोशनी है और चमेली की सुगन्ध है।

अब मुझे लिफ़ाफ़े छाँटने थे। हर लिफ़ाफ़े पर पाने वाली का नाम लिखा हुआ था। लिफ़ाफ़े छाँटने पर शैतान उनको बाँटने लगा। मुझे भी पाँच लिफ़ाफ़े मिले, लेकिन शैतान के लिए बीस थे। दादी माँ ने राय दी थी कि सब लड़कियों को चिट्ठी लिखूँ ताकि किसी को दुख न हो। मैंने ऐसा ही किया। बीमारी की वजह से कोई तसवीर नहीं खींच सकी। इसलिए सिर्फ लिखा : ''दोस्ती सबसे सुन्दर फूल है, इसे पानी दिया करो।"

लेकिन लिखते समय ही मुझे मालूम था कि ऐसा लिखने से कोई फ़ायदा नहीं होगा। हम में प्यार नहीं होगा, हमारे बीच हमेशा कुछ रहेगा जो दिखाई नहीं देता, लेकिन दिल में छिपा रहता है। मुझे तो टोनी से प्यार है। फिर भी ऐसा लगता है कि वह भी मेरे दिल को पूरी तरह से नहीं समझती। मैं उसे अपने खेल नहीं बताती, आदमख़ोर की बात भी नहीं बताती। मैंने सिर्फ यह लिखा कि यरमीला कौन है।

''प्रिय तोनि, कागज़ की मेरी गुड़िया कार्ल्सबाद की राजकुमारी है। दादी माँ ने

बताया कि वह एक चेक महिला की बहुत अच्छी बेटी थी, प्यार से तुम्हारी लेनि।"

मैंने देखा कि टोनी ने लिफ़ाफ़ा फाड़कर मुझ पर निगाह डाली, लेकिन मुसकराई नहीं।

सब चिट्ठियाँ बाँटने के बाद मैं दूसरी कक्षा में दौड़ी कि अकेले में सब चिट्ठियाँ पढ़ लूँ। पहली चिट्ठी में सुन्दर अक्षरों में लिखा हुआ था : 'ईमान और सत्य तुम्हारी जीवनयात्रा के साथी रहें।"

यह मास्टर जी की लिखी होगी। टोकरी में अट्ठाईस ऐसी चिट्ठियाँ उन्होंने रखी थीं। दूसरी चिट्ठी में क्या है?

"एक कोमल फूल होता है
इस दुनिया के दुख नहीं जानता है
जब चारों ओर सब मुरझाता है
तो मुझे याद करो कहता है।"

प्रिय तोनी के बड़े टेढ़े-मेढ़े अक्षर हलके नीले कागज़ पर लड़खड़ाते हैं।

एक पीले लिफ़ाफ़े पर हर हरी डाली की तस्वीर है, अन्दर गुड्डे और छोटे काले कुत्ते की तसवीर है, कुत्ते के मुँह से 'वाउ वाउ" निकलता है। तसवीर बहुत प्यारी है और नीचे गेरत्रूद के हस्ताक्षर हैं। गेरत्रूद ने मुझे चिट्ठी भेज दी। चौथी चिट्ठी खाली है, सिर्फ कोने में बड़ा प्रश्नवाचक है। किसी ने मज़ाक़ किया है। आख़िरी लिफ़ाफ़े में कुछ ज़्यादा लिखा हुआ है, बड़े अक्षरों में।

''तू फ्राइवल्द परिवार की नहीं है,
कहीं की लौंडिया है।
रेलवे-स्टेशन पर पड़ी मिल गई।

एक बार, दो बार, तीन बार पढ़ लिया। न जाने किसने लिखा है। तो मैं फ्राइवल्द परिवार की नहीं हूँ, मम्मी मेरी मम्मी नहीं है, राऊल मेरा भाई नहीं है, दादी माँ मेरी दादी नहीं हैं। और मैं रेलवे-स्टेशन पर पड़ी मिल गई थी।

काम तमाम। फरिश्ते वाले पंख टूट गए, यह लिबास उतार फेंकने का मन है। काश कभी फ़रिश्ता न बनी होती। काश पाँचवीं चिट्ठी कभी न मिली होती।

लिबास उतरते फट गया है तो क्या हुआ। गला रुँध गया, साँस लेना मुश्किल हो गया, कितनी पीड़ा। मरना चाहती हूँ। मैं किसी की नहीं हूँ। आँसुओं की धारा फूट पड़ी इन्हीं आँसुओं की, जो मम्मी को इतने बुरे लगते है तो क्या हुआ, वह मेरी मम्मी नहीं है...

निकोलस की पार्टी ख़त्म हो रही है, सब बाहर निकल रहे हैं। अन्नेलोरे ने कक्षा में घुसकर आवाज़ दी : ''लेनि, कैसी चिट्ठियाँ मिल गईं, दिखाओ तो।"

मैं तेज़ी से उठ खड़ी हुई। अब तो समझ में आया किसने मुझे नीचा दिखाया,

किसने मुझे कुचल दिया। किसी की न होना सबसे बुरी पीड़ा है।

पता नहीं कैसे हुआ कि आँखों के सामने अँधेरा छा गया, मुझे अचानक बड़ी गर्मी लगी और मेरा हाथ खुद ही खुद उठ गया। अँधेरा तब छँट गया जब अन्नेलोरे फ़र्श पर से उठ रही थी और दूसरी लड़कियाँ मुझे घेरे चिल्ला रही थीं हरामज़ादी, झूठी बन्दरिया।

अन्नेलोरे की माँ दौड़ी आई और मेरे बाल पकड़कर चिल्ला रही थी : तूने हमारी अन्नेलोरे को मारा। मास्टर जी, कृपा करके इसे कड़ी सज़ा दीजिए, ऐसी कमीनी ने मेरी बच्ची को..."

मास्टर जी ने बहुत गम्भीर होकर कहा : ''आप पूरा विश्वास करें कि दोषी को सज़ा मिलने का इन्तज़ाम करूँगा। बच्चो अब घर जाओ। आप गलियारे में इन्तज़ार करें। आप भी, मिसेज़ फ्राइवल्द।"

मैं काँप रही थी, क्योंकि जानती थी कि मास्टर जी को सब कुछ नहीं बता सकती। शायद यह सच हो सकता है कि रेलवे-स्टेशन पर पड़ी मिल गई थी और फिर क्या होगा? फिर मुझे घर पर रहने नहीं देंगे कहाँ जाऊँ?

''लेनि, तुमने इसे क्यों मारा?"

मैं चुप।

''क्या इसने तुम्हारा कुछ बुरा किया?"

मैं चुप।

''क्या तुमने इसका कुछ बुरा किया, अन्नेलोरे?"

''जी नहीं, मास्टर जी। मैंने बस पूछा कि इसे कैसी चिट्ठियाँ मिलीं और उसने जवाब नहीं दिया और मुझे मारना शुरू किया और मैं गिर गई।" वह मास्टर जी को प्रभावित करने के लिए रो पड़ी और हिचकियाँ भरने लगी।

''तुम्हें क्या कहना है, लेनि?"

''सही है, मास्टर जी, लेकिन मैंने मारना शुरू नहीं किया। मैंने बस एक तमाचा जड़ दिया।"

''लेकिन तमाचा क्यों लगाया?"

मैं चुप।

अन्नेलोरे ने दखल दिया : ''मास्टर जी, कोई वजह नहीं थी। मैंने सिर्फ पूछा कैसी चिट्ठियाँ मिलीं, मैंने कोई बुरी बात नहीं कही।"

''अच्छा लेनि, तुम्हें कैसी कैसी चिट्ठियाँ मिलीं?"

''एक आपकी मिली, एक टोनी की, एक गेरत्रूद की, एक रहस्यात्मक, कोने में प्रश्नवाचक..."

''लेकिन मास्टर जी, इसकी वजह से यह नाराज़ नहीं हुई, एक और चिट्ठी की

वजह से नाराज़ हुई," अन्नेलोरे ने दुबारा दखल दिया, लेकिन अचानक समझ में आ गया होगा कि ज़रूरत से ज़्यादा कहा, रहस्य खुल गया।

''तुम्हारी लिखी चिट्ठी की वजह से नाराज़ हुई न, अन्नेलोरे। वह चिट्ठी दिखाओ।"

''मास्टर जी, मैंने कोई चिट्ठी नहीं लिखी, मैं वैसे भी लेनी को चिट्ठी न भेजती, मैंने बस देखा कि इसे एक चिट्ठी और मिली, मैं भाँप गई कि इसी की वजह से नाराज़ है। बड़ा हरा लिफ़ाफ़ा था..."

''दिखाओ।"

''मास्टर जी, उस चिट्ठी में अन्नेलोरे ने मुझे बहुत नीचा दिखाया। तमाचा इसका बदला था। इसने लिखा..."

अचानक अन्नलोरे मेरी ओर मुड़कर बोली : ''लेनी रानी, उस चिट्ठी में तुम्हें बुरा नाम देने की क्षमा करो। हाँ मास्टर जी, वह तमाचा सही रहा। इससे कहिएगा कि अब मुझसे नाराज़ न हो।"

''तो कैसा नाम दिया कि अचानक राय बदल ली?"

मै दृढ़ आवाज़ में बोली : ''लौंडिया।" अब समझ गई कि जीत मेरी होगी। यहाँ से सिर उठाए जा सकूँगी।

''अच्छा, लौंडिया कहने के बदले में तमाचा तो ज़्यादती हुई, लेकिन लौंडिया लिखने के पीछे सहेली की खुशी बिगाड़ने का बुरा इरादा ज़रूर था। तब तमाचा ठीक रहा। दोनों हाथ मिलाओ।"

अन्नेलोरे ने मेरा हाथ पकड़ लिया और मास्टर जी ने मेरी दादी और अन्नेलोरे की माँ को अन्दर बुलाया। ''दोनों बराबर हैं। अन्नेलोरे ने लेनी को लौंडिया कहा और लेनी ने बदला लिया," मास्टर जी बोले।

''और आप, मास्टर जी, मुस्कराते हैं जब आपकी छात्रएँ एक दूसरी को मारती हैं," मिसेज़ श्मुत्सर चिल्लाई। ''आख़िर हम तो जानते हैं कि अध्यापक बाउम जी की लाड़ली कौन है और..."

''मम्मी, बुरा न मानना।" अन्नेलोरे ने दखल दिया, ''पहल सच में मैंने की, फिर मैंने लेनी से माफी माँगी..."

''क्या? तुमने माफी माँगी? तुम, मेरी बेटी, शुद्ध जर्मन रक्त की, वैसी... वैसी ...माफी..."

''मिसेज़ श्मुत्सर," अब दादी माँ ने दखल दिया, ''छोटी शुरुआत का भी बुरा नतीजा हो सकता है। सिर्फ हमारे लिए नहीं। बरगर परिवार को याद करें। और वह तो हमारे उच्चतम मनुष्य की इच्छा थी। देशभक्ति। क्या आपको याद नहीं उस समय आपने मीटिंग में क्या-क्या कहा था जब हम लोग हिचकिचाते थे? एक भी प्राणी

खोने न दें, यह आपने कहा था।"

ये बातें मेरी समझ में नहीं आईं । मास्टर जी भी नहीं समझे। फिर दादी माँ के साथ अँधेरे में निकल आई। अजीब-सी ख़ामोशी रही। शाम को खाना खाते समय राऊल ने हमारे फ़रिश्ते का मज़ाक़ उड़ाया और मम्मी ने पूछा कि कैसा रहा। दादी माँ ने जल्दी बताना शुरू किया, मुझे बोलने नहीं दिया।

अगले दिन दादी माँ ने कहा : ''कल लेनी और अन्नेलोरे में थोड़ा झगड़ा हो गया। मिसेज़ श्मुत्सर ने ऐसी बातें कीं कि बहरा भी समझ सकता। उसे शर्म आनी चाहिए।"

''और बच्ची?"

''इसने ध्यान नहीं दिया।''

मन ही मन मुझे हँसी आई। मैंने ध्यान नहीं दिया? बहस मेरी समझ में नहीं आ सकी? मेरे सामने अब तो संकेतों में बात करना ज़रूरी नहीं, अब तो मुझे सब मालूम है।

तब से कई दिन तक स्कूल में एकाग्रचित नहीं हो सकी। रेलवे-स्टेशन की सोचती थी। और मरने की सोचती थी। मर जाती तो कितना अच्छा होता। कभी कभी रात में यह खेल खेलती थी। हाथ जोड़ते लेटी हूँ। नहीं हिलती। आसपास सुन्दर सफेद फूल हैं। चारों तरफ मोमबत्तियाँ जलती हैं और उनकी रोशनी में सुन्दर लगती हूँ। मेरी सहेलियाँ, अन्नेलोरे और उसकी मम्मी भी आएँगी। और बहुत दुखी होंगी क्योंकि मेरी मृत्यु की दोषी हैं। कोने में घुटने टेककर विलाप करेंगी। कोई उन पर ध्यान नहीं देगा।

सब कुछ बदल जाएगा। मर जाती तो कितना अच्छा होता।

3

लेकिन सुबह आँख खुल जाती है और मामूली दिन शुरू होता है। और मुझे वह चिट्ठी याद आ गई। अपने पास छिपाए रखी है।

मास्टर जी ने उस दिन मुझसे कोई सवाल नहीं किया और मैं अन्यमनस्क सी रही। उन्होंने कहा : ''लेनि, अब तो तुम्हें होश में आना चाहिए।"

मुझे बुरा नहीं लगा। सब मुझे रहने दें। उन्हें क्या मालूम। मैंने कुछ नहीं कहा। बस कहीं इन्हें पता न चले कि मैं कितनी नाचीज़ हूँ।

दुनिया के सब लोगों के पापा और मम्मी हैं, या पहले थे और अब नहीं रहे। तब दीवार पर उनके फोटो टँगे हैं जैसे हमारे घर में फ्राइवल्द जी का फोटो टँगा है। दूसरे लोगों के मेरे नहीं।

बहुत थोड़ी देर तक मैंने सोचा कि वह सब कुछ सच नहीं है, लेकिन जब हम

दोनों मास्टर जी के सामने खड़ी थीं तो समझ में आ गया कि सच है। अन्नेलोरे इतना डरती थी कि रहस्य खुल जाएगा और उसे सज़ा मिलेगी।

फिर भी वास्तव में यह कोई नई खबर नहीं थी। जब अध्यापिका कहती थी कि जर्मन आदमी जो चाहता है कर सकता है तो मुझे बहुत अजीब लगता था। या जब 'मरी हुई मछलियाँ' मिल गई थीं।

वह क्या होता था? मुझे तो मालूम है। मुझे तभी मालूम था कि उसका कहना नहीं मानती। मन ही मन सोचती थी ताज्जुब है कि तुम लोग यह सब कैसे कह सकते हो और कर सकते हो। ऐसा नहीं कि ताज्जुब है कि हम लोग यह कह सकते हैं और कर सकते हैं। तुम हम नहीं। ऐसा बार बार होता था। वह सब कुछ तुम लोग कैसे रहते हो, जीते हो। तुम लोग सुबह से शाम तक। अब तो खूब सावधान रहूँगी।

आज पन्द्रह दिसम्बर था। चित्रांकन की क्लास थी। मास्टर जी ने क्रिसमस का कोई चित्र खींचने को कहा। लड़कियों ने क्रिसमस के पेड़ों, घंटियों, तारों आदि के चित्र खींचे। न जाने क्यों मैंने अचानक रेलवे-स्टेशन और इसके सामने हाथ में अटैची पकड़े बच्ची की तसवीर खींची। कोने में लिखा ''शुभ क्रिसमस।"

तसवीर देखकर मास्टर जी को ताज्जुब हुआ। मैंने बताया कि तसवीर में मैं हूँ, क्रिसमस मनाने जा रही हूँ। 'अच्छा अच्छा,' मास्टर जी हँस दिए। 'लेकिन तुम्हारी अटैची की एक कमी है।"

''जी हाँ।" कहकर मैंने जल्दी गोल लेबल की तसवीर खींची और इस पर लिख दिया Made in Czechoslovakia।

मास्टर जी हँस दिए 'नहीं तो, तुम्हरी अटैची का हैंडल नहीं है। यह अँगरेज़ी शब्द हैं माने चेकोस्लोवाकिया में उत्पादित।"

''मास्टर जी, क्या हमारे यहाँ अटैची नहीं बनती?"

मास्टर जी बोले : ''ज़रूर बनती है। अच्छी बनती थीं और फिर अच्छी बनेंगी। तुम्हारी अटैची संयोगवश वहाँ की है।"

क्लास समाप्त होने पर मैंने टोनी से फुसफुसाकर कहा : ''क्या रविवार को चाबियाँ लेकर आ सकोगी?" उसने हामी भरी।

अब जानती हूँ मुझे क्या चाहिए। यह जानना चाहती हूँ कि 'कहीं की' क्यों हूँ।

रविवार को बर्फ़ की रानी ड्यूटी पर गई, राऊल अपने दोस्तों के साथ बाहर गया और दादी माँ ने खाना खाकर झपकी ली।

ढाई बजे टोनी चाबियाँ ले आई। दादी माँ सो रही थीं। मैंने अटैची ओवन में से निकाल ली। धूल पोंछ ली। फिर चाबियाँ लगाने की कोशिश करना शुरू किया। एक चाबी लग गई, अटैची खुल गई।

मैं बिलकुल काँप रही थी कि इसमें क्या मिलेगा। चाहती थी कि कोई चीज़ मिल जाए और साथ ही डर था।

जो भी हो अटैची खुल गई और इसमें मेरी छोटी सफेद टोपी, एक छोटा सफेद मोज़ा और नीना मिल गई। मेरी प्यारी गुड़िया, लाल साया, काली चोली और सफेद टोपी पहने मेरी गुड़िया। टोपी का बड़ा सफेद फीता है इसे कहते थे...क्या कहते थे? किसी परिंदे का नाम था। नीना सुन्दर है। टोनी देखती रह गई और मैंने गुड़िया को अपने से लिपटाया। मेरी प्यारी गुड़िया।

''इससे क्यों नहीं खेलने देते?"

''कहीं टूट न जाए।"

''अच्छा," टोनी ने कहा, ''और सन्तरा कहाँ है?"

''सड़ गया।"

''और यह मोज़ा किसका है?"

''मेरा।"

मोज़े पर दो अक्षर काढ़े हुए हैं। अ स। चूँकि ये मेरे अक्षर नहीं हैं, मोजा जल्दी लपेट लिया।

और यह वही टोपी है जिसे मैंने उस दिन पूछा था। उन लोगों को मालूम भी नहीं था कि मेरे पास कभी ऐसी टोपी थी। हाँ, मालूम कैसे होता।

टोनी हँसी कि यह तो अब लगा नहीं सकती। बहुत छोटी है। टोपी के अन्दर लेबल है : ''सैलून ईवा क्लातोवी।" एक और लेबल चिपकाई हुई है, इस पर पता होगा, लेकिन आधा फाड़ा हुआ है। इतना ही बच गया : 'व्लासतिमिल स...', इसके नीचे 'होर...'

उस मिनट घर का दरवाज़ा खुल गया और बन्द हुआ। मैंने अटैची ओवन में ठूँस दी और टोनी ने मुझे चाबी थामा दी। 'रख लो, लेनि। तुम्हारी है।'

कमरे में कोई नहीं आया। बूढ़ी मिसेज़ फ्राइवल्द सोती रही। प्रिय दादी, मैंने सोचा। तुम कितनी शान्ति से सो रही हो।

क्रिसकम का पेड़ दादी माँ ने मेरी सहायता से सजाया। रात को खाने को समुद्री मछली और आलू का सलाद मिला। बर्फ़ की रानी लम्बी साँसें लेती थी कि इस साल क्रिसकस कितना खराब है। दादी माँ ने याद दिलाया कि पिछले साल का क्रिसमस इससे कहीं खराब था। तब बमबारी से घर ढह गया था। बहुत सा सामान खराब हो गया था। हम तो बच गए थे। और काली अटैची भी संयोगवश बच गई। कितनी खुशी की बात है। यह अटैची तो मैं हूँ।

सो जाने से पहले मुझे बची-खुची मछली खाद्य-भंडार में रखनी थी। वहाँ रसोई से बात सुनाई देती है। और मैं सब कुछ जानना चाहती हूँ।

दादी माँ ने बर्फ़ की रानी से कहा : ''लेनी इन दिनों अजीब सी लगती है।''

''मैंने ध्यान नहीं दिया,'' बर्फ़ की रानी ने जवाब दिया।

''है तो। जब से होर्स्त का वह किस्सा हो गया।''

''मैंने ध्यान नहीं दिया,'' बर्फ़ की रानी ने दुहराया, ''मिसेज़ बरगर वापस आई लेकिन उससे क्या व्यवहार किया गया। उसने बरसों तक किसी बदमाश के लड़के को पाला-पोसा, यह आभार है? और आपको विश्वास नहीं होगा लड़का जाना नहीं चाहता था। अगर वे डटे रहते तो उसे रख सकते थे।''

"नहीं चाहता था? बाप से मिलकर भी नहीं?"

''वह उसका बाप नहीं था जो उसे लेने आया। कोई वकील था। बाप को मौत की सज़ा मिली थी और माँ का दिमाग ख़राब है।''

मैं सन्न रहकर सुन रही थी। इन लोगों ने मुझे, 'कहीं की लौंडिया' को, दूसरों की बातें छिपकर सुनना सिखा दिया।

"और लेनि, क्या वहाँ कोई उसका अपना है?"

''बाप ज़िन्दा नहीं है, माँ है या नहीं, मुझे नहीं मालूम।'' काश कि मर जाने का तरीका जानती। या क्या किया जा सकता है जब बच्ची इतनी इतनी इतनी दुखी है। जब उसका बाप जिन्दा नहीं है और माँ का कुछ पता नहीं। शायद ज़मीन पर गिरकर कम्बल से सिर ढँकना चाहिए और... लेकिन चुपचाप, वे बोलती रहती हैं।

"होर्स्त के सिलसिले में यहाँ की अमरीकी कमान को सूचना मिली। लड़के के कुछ निशान यहीं मिल गए। अमरीकी खुफ़िया ने यह लीक पकड़ी और एक हफ़ ते में लड़का मिल गया। अगर यहाँ रूसी कमान होता तो मुसीबत होती। वे ज़्यादा सख़्त हैं। माँ जी, यह सोचकर कि हमारी लड़की उस नीच स्लावनिक नस्ल की है... विश्वास मानिए, मेरा दिल उससे कभी नहीं लगा। यह बड़ी होकर भाग जाएगी। हाँ, तब हमें सब भड़काते थे कि गद्दारों के अनाथ गोद लो, उनको अच्छे जर्मन बना दो। और राऊल कि हमारा सिर्फ एक लड़का है...देखिए माँ जी, देखिए नतीजा क्या होगा।''

हाँ, देखेंगे। जब यह हाल है तो ज़रूर भाग जाऊँगी। अच्छा तो मैं गद्दार की सन्तान हूँ। तो मैं इतनी नीच नस्ल की हूँ, लेकिन मुझे बाँहों में उठाकर अपनी मूँछ नोचने देते थे और क्या कहते थे? ऐसा बाद में किसी ने नहीं कहा।

शायद तब उनको फ़ौज में नहीं ले गए थे, शायद हमारे घर में कुछ इसलिए ढूँढ़ रहे थे कि पापा गद्दार थे।

अच्छा, अमरीकी आया और होर्स्त एक हफ़ ते बाद अपने घर चला गया। मैं मैं किसी अमरीकी को बताऊँगी।

मैने अमरीकियों पर कभी ठीक से ध्यान नहीं दिया था। उनके पास से गुज़रती

थी बस। उन्होंने मेरा कुछ नहीं किया, लेकिन मेंढक जैसी हरी वर्दी पहनते हैं, सिर पर हरी टोपी लगाते हैं, मेंढक जैसे बोलते भी हैं यू क्वाउ क्वाउ क्वाउ, बाउ, बाउ।

हाँ किसी अमरीकी को बताऊँगी। धीरे धीरे खाद्य-भंडार से निकली। कमरे में क्रिसमस पेड़ की सुगन्ध थी। राऊल को उपहार में दूरबीन मिली। और मुझे मालूम था कि मुझ जितनी दुखी दुनिया में कोई नहीं है। सब घरवाले मुझे बेवकूफ़ और बुरे लगे। मुझे अपने यहाँ क्यों घसीट लाए थे?

मुझे लोक-कथाओं की किताब मिली जो पहले राऊल की थी। इसमें पलटने लगी। परीकथा की दुनिया में जीना कितना आसान होता।

लेकिन अब मुझे रोना नहीं है। मरने का खेल भी खेलना नहीं। अब मुझे घर पहुँचने का तरीका सोचना है।

सुबह दिमाग में कुछ आ गया। ''राऊल, प्लीज़, अपनी अँग्रेज़ी की पाठ्य-पुस्तक ज़रा दिखा दो। अँग्रेज़ी सीखने की बड़ी इच्छा है।

मिसेज़ रोसा बोली : ''ठीक है, सिखाओ इसे।''

राऊल पुस्तक ले आया, साथ देखने लगे। लेकिन इसमें भयानक शब्द हैं, कुछ लिखते हैं, कुछ पढ़ते हैं।

मुझे क्या सीखना चाहिए? बस दो एक जुमले। यह कहना चाहूँगी : ''फ़ौजी साहब मैं लेनी फ्राइवल्द नहीं हूँ। चेकोस्लोवाकिया की लड़की हूँ, प्लीज़ मुझे वहाँ पहुँचा दीजिए, जैसे होर्स्त को पहुँचा दिया था। मेरी वहाँ मम्मी हैं और ज़रूर हैं।''

तो राऊल से पूछा : ''कैसे कहते हैं मैं लड़की हूँ?''

''ऐसे,'' वह बोला और परचे पर लिखा : I am a girl. और पढ़कर सुना दिया।

''और मैं नहीं हूँ'', कैसे कहते है?''

उसने परचे पर लिखा : I am not.

''यह कैसे बोलते हैं, यह तो बताओ।''

राऊल अजीब सा मुँह बनाकर बोला : ''अयेम ए गेर्ल। अयेम नोट।''

यह भी याद करना चाहती थी कि मास्टर जी के शब्द Czechoslovakia का क्या उच्चारण है लेकिन याद नहीं आया।

सुबह आँख खुलते ही राऊल का लिखा हुआ परचा ढूँढ़ना शुरू किया लेकिन वह मिला नहीं। कहीं खो गया। और मैं सब कुछ भूल गयी। सब शब्द कहीं उड़ गए।

क्रिसमस के बाद पढ़ाई शुरू नहीं हुई क्योंकि स्कूल गर्म करने के लिए ईंधन नहीं था।

टोनी रोज़ मुझे लेने आती थी और हम 'खरगोश टीले' पर फिसलने जाती थीं। दो लड़कियों के पास हिमगाड़ियाँ थीं, उनमें से एक ने मुझे अपनी हिमगाड़ी पर बैठने

को बुलाया। बाकी लड़कियाँ ढलान से बस फिसलती थीं।

अचानक ढलान में अमरीकी नज़र आया। तेज़ी से स्की पर नीचे उतर रहा था। हमारी हिमगाड़ी से थोड़ी ठोकर लग गई। हम दोनों गिर गईं, हिमगाड़ी टूट गई वैसे भी बहुत खस्तेहाल थी। अमरीकी लड़खड़ाता हुआ नीचे तक पहुँचा, पहुँचते ही मुड़ गया और ऊपर चढ़ने लगा। उसे हम पर तरस आया। 'क्वाउ क्वाउ' कहकर तुरन्त चला गया। वह लड़की मुझे ताने देने लगी कि मेरी वजह से गाड़ी टूट गई। मैं संकोच में खड़ी रही, रोई नहीं। मैं तो अब ज़रा-सी बात को लेकर नहीं रोती। रोना बचपना है।

'हमारा' अमरीकी वापस आया और उसके साथ एक और अमरीकी छोटी सी हिमगाड़ी खींचता आया। ''क्वऊ क्वऊ" बोलकर हिमगाड़ी की रस्सी को उस लड़की के हाथ में थमाया। लड़की ने झगड़ना बन्द करके कहा 'थैंक यू'। दूसरा अमरीकी सिर्फ हँस रहा था। बोला नहीं।

मेरे दिमाग में आया कि अब तो इनको बताऊँ कि मैं...

खामोश रहने वाले ने जेब से दो पैकेट बिस्कुट निकालकर हम दोनों को दिए। फिर दो सन्तरे निकाले। पहले हम चारों आपस में सन्तरे फेंकते और पकड़ते थे, फिर उसने इशारा किया कि ले लो। दूसरी लड़की सन्तरा लेकर भाग गई, मुझे ज़रा झिझक लग गई।

हँसने वाले अमरीकी ने जर्मन में पूछा : ''तुम्हें सन्तरा पसन्द नहीं है क्या? दुनिया में बहुत सन्तरे हैं। बस जर्मनों को अक्ल से काम लेना चाहिए।''

मैंने चारों ओर नज़र डाली, कहीं जो मुझे अब कहना है किसी और को सुनाई न दे। टोनी को भी नहीं। फिर मैंने जल्दी कहा : ''मैं जर्मन नहीं हूँ।''

अचानक मुझे अपनी बात अजीब लगी। मानो कि बिना रेलिंग के किसी बहुत ऊँचे सोपान पर बिलकुल अकेली खड़ी हूँ, सहारा कहीं नहीं ले सकती। मेरे सामने से अन्नेलोरे और उसकी माँ, हमारा राऊल और बर्फ़ की रानी गुज़रते हैं, टोनी और मास्टर जी और दादी माँ भी गुज़रते हैं, हर एक मुड़कर देखता है, लेकिन बिना कुछ कहे आगे चलते हैं।

पुरानी जर्मन कथाओं के छोटे बौने भी चलते हैं, जर्मन कथाओं की परियाँ गाती हुई चलती हैं आख़िर में कुछ बच्चे मार्च करते हैं अरे, यह हमारे स्कूल के बच्चे हैं। हमारे स्कूल के छात्र हैं और मैं उनके साथ नहीं हूँ...कोहरा छा रहा है। नीना और अटैची पकड़े सीढ़ी पर अकेली खड़ी हूँ, फिर भटकती हूँ...घूमती हूँ वन में घूमती हूँ अकेली...लेकिन मुझे आवाज़ कोई देता है। यरमीला सफेद कपड़े पहने मुझे लेने आ रही है।

''अफसोस, अफसोस।" हँसमुख हँसने लगा, ''तो तुम क्या हो?"

''मालूम नहीं, शायद चेकीय की हूँ।

''अरे," हँसमुख को अचम्भा हुआ, ''और तुम्हारे मात-पिता कहाँ हैं?"

माता-पिता? थोड़े समय पहले मैंने सुना था : ''बाप जि न्दा नहीं है, माँ का कुछ पता नहीं। लेकिन मेरी माँ हैं। ज़रूर हैं।"

''मेरी माँ वहाँ हैं। हाँ, मैं चेक हूँ। होर्स्त बरगर भी चेक है। वह हमारे पड़ोस में रहता था और उन लोगों को इसकी कोई रिपोर्ट देनी चाहिए थी और नहीं दी और बाद में फिर भी उसे घर भिजवाना पड़ा। और मेरी भी रिपोर्ट देनी थी और नहीं दी गई और मैंने सब कुछ का पता खुद लगा लिया।"

''यह तो दिलचस्प बात है।" हँसमुख ने जर्मन में कहा। फिर कुछ बोलने लगा और बोलता रहा, दूसरे अमरीकी की पीठ थपथपाई और दूसरा अमरीकी उछलने लगा और हँसमुख अमरीकी की पीठ थपथपाने लगा। फिर दोनों हँसते हुए मेरे चारों ओर उछलने लगे और जेबों में से चाकलेट और पैसा निकालने लगे। लेकिन मैंने कहा : ''फ़ौजी साहबो, मुझे पैसा नहीं चाहिए, मैं चाहूँगी कि आप मुझे मम्मी के पास पहुँचा दें।"

वे बहुत गम्भीर हो गए। बोले : ''यह हमारा मामला नहीं है, बाल-कल्याण का अफ़सर फैसला करेगा। अगर सच बोलती हो तो तुम्हें उनके पास ले चलेंगे। अगर झूठ बोलती हो तो बुरा होगा।"

फिर मैंने उनको सब कुछ बताया कि मैंने पता कैसे लगाया था। हँसमुख ने कहा : ''कल दोपहर का खाना खाने के बाद इसी टीले की तलहटी में दुराहे पर आओ। वह सब सामान लेती आओ और घर पर चुप मारो।''

फिर चले गए और मैंने टोनी का इन्तज़ार भी नहीं किया, जल्दी घर दौड़ती सोच रही थी कि यह कैसे करूँ कि कहीं किसी को पता न चले कि अटैची लेकर बाहर निकलूँगी। टोनी बुरा मान गई। टोनी अभी जो चाहे समझे। जल्द ही उसे भी पता चलेगा।

घर पर अँगारों पर लोट रही थी। कुछ दिन से 'मम्मी' और 'दादी माँ' कहने से कतराती आई हूँ क्योंकि ये न मेरी मम्मी है न दादी। मेरी मम्मी तो कहीं और रहती हैं, मेरी अपनी मम्मी।

सोच रही थी कि अटैची लिए घर से कैसे निकलूँ। जब मम्मी नहीं, मिसेज़ फ्राइवल्द खाना खाकर आफिस चली गई थी और बूढ़ी मिसेज़ फ्राइवल्द बर्तन धोने लगी तो सफल हुई। मुश्किल से, फिर भी सफल हुई। नुक्कड़ के पीछे दौड़ पड़ी। दूरी से 'अपने हँसमुख' को दुराहे पर खड़ा देखा।

''चलो बेटी। सामान है?" मेरी अटैची अपने हाथ में ली। अब हँसता नहीं था, गम्भीर था। हमने एक सड़क पार की, दूसरी सड़क पार की। नुक्कड़ के पीछे मुड़

गए और बड़ी बिल्डिंग के सामने रुक गए। इसके फाटक पर लिखा हुआ था : **UNRRA CHILD WELLFARE DEPARTMENT.**

मैं ज़रा भी नहीं समझी। यूएनरा लोग इसे कहते हैं जो अमरीकियों के पास होता है आटा, सिगरेट।, टिन आदि। यूएनरा की तारीफ़ करते हैं, यूएनरा कोई बुरी चीज़ नहीं हो सकता। बाकी शब्द के क्या माने हैं देखा जाएगा।

अन्दर गए। हँसमुख ने एक दरवाज़ा खटखटाया, अन्दर गया और थोड़ी देर में मुझे लेने लौट आया। मैंने सोचा कल जाऊँगी।

अन्दर बहुत लम्बा फ़ौजी अफ़सर मिला। बोला : ''घबराओ मत और हमें सब कुछ बताओ।"

मैं नहीं घबराई और अपनी सारी आपबीती सुना दी। यह भी बताया कि हमेशा से जानती थी कि कहीं और 'दूसरी दुनिया' है, मैं उसे जानती हूँ और उसमें रह चुकी हूँ। और यह कि स्कूल में सब लड़कियों से अलग थी। यह कि मुझे कितना दुख हुआ क्योकि एर्ना की मम्मी को गैस में भेज दिया गया था और कि वह रूसी महिला चिल्लाती थी मुझे जीने दो, मेरी बिटिया है।

"कौन रूसी महिला?"

''वह, अच्छा यह मैंने सोच निकाला, लेकिन वह ज़रूर चिल्लाती थी। मैंने ऐसा सपना देखा।"

दो फ़ौजी एक दूसरे को देखकर मुस्कराए। मेज़ पर बैठे हुए लम्बे अफ़सर ने मुझ पर उँगली उठाकर कहा : ''ऐसा लगता है बच्ची कि बहुत झूठ बोलती हो। तुमने क्या-क्या सोच निकाला?"

लेकिन मैंने अटैची खोलकर अपनी टोपी, गुड़िया और मोज़ा सबको दिखाकर कहा : ''यह मुझे अटारी में मिल गया। यह लेबल देखिए, इस पर कुछ चेक शब्द लिखे हुए हैं।" फिर अटैची का किस्सा सुनाया।

''अच्छा।" लम्बा अफ़सर बोला, इसे मेज़र कहते थे, ''अब यह सब कुछ एक बार फिर एक और आदमी के सामने सुनाओगी।"

हँसमुख दूसरे कमरे से अधेड़ चश्मेवाले जर्मन को ले आया। इसने टाइपराइटर के पास बैठकर मेरा सारा किस्सा टाइप किया और बीच बीच में मुझ पर अजीब सी निगाह डाली। हँसमुख अमरीकी ने उससे पूछा : ''आपको कैसा लगता है?"

चश्मेवाला बोला : ''कैसा लगता। एक और बच्चेवाला किस्सा।"

मेज़र सिर हिलाकर बोला : ''कोई जल्दबाजी करनी नहीं चाहिए ज़रा सूची लाइए।"

चश्मेवाला जल्दी दूसरे कमरे से पतली सी पुस्तिका ले आया, इसके पन्ने पलटते बड़बड़ाया : ''बेलजियम। चेकोस्लोवाकिया यह है लापता, लड़के। लड़कियाँ...

यहूदिनें, अर्याएँ... मृत्यु प्रमाणित लापता। लापता : छह साल तक की, छह साल से दस साल तक की, दस साल से चौदह तक...हाँ यहाँ होगा, तुम्हारी उम्र कितनी है?"

चश्मेवाले ने पुस्तिका मेजर की ओर बढ़ाई। ''यह स्तम्भ होगा, सर।"

''अच्छा देख लेता हूँ।" वह तरह-तरह के नाम देखने लगा। अचानक मुझसे पूछा : ''तुम्हारा नाम क्या है?"

"लेनि या मुझे नहीं मालूम।"

''यह अच्छी रही।" चश्मेवाले ने कहा और सब हँस पड़े।

फिर मेज़र ने कन्धे हिलाकर कहा : ''सूची में नहीं हो।"

''चेकोस्लोवाक खोज दल इसकी तलाश में नहीं है।"

मैंने कहा : ''तो मुझे कृपा करके सूची में दर्ज करें।"

फिर देर तक खामोशी रही, फिर देर तक आपस में फुसफुसाते रहे। बोलते रहे, बोलते रहे और मुझे लगा कि हँसमुख की बात कोई नहीं सुनता।

चश्मेवाला जर्मन फर्राटे से अँग्रेज़ी बोल रहा था। मुझे लगा कि मेजर से भी ज़्यादा बोला।

नतीजा हुआ : मुन्नी, तुम घर जाओ। हम तुम्हारी माँ से भी बात कर लेंगे, तब देखा जाएगा। शायद यह सब सिर्फ तुम्हारे सपने हैं। अपनी दूसरी दुनिया के सपने में देखा होगा। सूची में दर्ज नहीं हो।"

मैं अटैची लेकर चली गई, हँसमुख मेरे साथ चला। मैंने पूछा : ''कब जाऊँगी? वह सब कुछ कोई सपना नहीं था। मेरे पास यह अटैची है, यह तो कोई सपना नहीं है।"

''मैं तुम्हारा कहना सच मान लेता हूँ।" हँसमुख बोला, ''बृहस्पतिवार को फिर खरगोश टीले आओ। कुछ तो करना चाहिए।"

घर आकर अटैची पहले तहखाने में छोड़ी और शाम को मिसेज़ रोसा और राऊल के आने से पहले कमरे में लाकर ओवन में रख दी।

रात को देर तक नींद नहीं आई। सोचती रही कि सूची में क्यों नहीं हूँ । होर्स्त तो ज़रूर सूची में था।

टोनी मुझसे नहीं बोली। मैं नहीं चाहती थी कि मेरे जाने से पहले मुझसे नाराज़ हो। अगले दिन कुएँ के पास मिल गई। नल का पानी फिर नहीं आता।

''तोनि, प्लीज़ बुरा न मानो।"

''झूठी हो। अमरीकियों से दोस्ती करती हो क्योंकि उनके पास चाकलेट हैं।"

''तोनि, तुम मुझे जानती नहीं हो। मेरा दुख नहीं जानती हो। मेरा बड़ा रहस्य है और अभी नहीं खोल सकती, लेकिन किसी दिन बताऊँगी और तुम मान जाओगी

और समझोगी।"

टोनी समझ गई कि मुझे कोई बड़ी चिन्ता है, लेकिन उसी मिनट उनके घर की खिड़की से किसी ने आवाज़ दी कि घर आओ। वह दौड़ी गई।

शाम को अंकल ओत्तो आया। तीन हफ्ते बाद अचानक आया। बोला : "मेरा इरादा इस घर आने का नहीं था, लेकिन पता चला कि मिसेज़ रोसा को कल समन मिलना है। हमारे उच्चतम युएनरा ने बुलाया। पुराने मित्र की हैसियत से चेतावनी देने आया हूँ।"

"चेतावनी के लिए बहुत धन्यवाद। किस सिलसिले में समन है?" मिसेज़ रोसा का चहरा पीला पड़ गया।

"ठीक ठीक नहीं मालूम लेकिन अनुमान करना आसान है," कहकर ओत्तो ने मुझ पर निगाह डाली।

मैं समझ गई कि हाल बुरा है। कल समन मिलेगा, परसों उनको पता चलेगा कि मैं वहाँ गई थी और क्यों गई थी। फिर मेरा क्या होगा? मार खाऊँगी या ऐसा भी हो सकता है कि मार नहीं होगी लेकिन मम्मी के पास जाने नहीं देंगे।

मेरा मन हुआ कि ज़ोर से चिल्लाऊँ कि उनके साथ यहाँ बिलकुल नहीं रह सकती, कि अपनी 'उस दुनिया' से, हरी वादी में छोटे घर से, सफेद वस्त्र पहने महिला से, कुत्ते वोरेख़ से विरह का मुझे कितना दुख है।

लेकिन उन्होंने मुझे देखा भी नहीं, आपस में धीरे परामर्श कर रहे थे। अचानक अँग्रेज़ी में बोलने लगे। दादी चली गई।

अगले दिन समन आ गया। खाना परोसती दादी के हाथ काँपने लगे। 'शायद ओत्तो ने सूचित...'

मिसेज़ रोसा बोली : "हो सकता है। इसकी वजह से कितनी परेशानी हुई थी। ओत्तो का बहुत अपमान हुआ। हम सबने उसका अपमान किया, हाँ सबसे बड़ा अपमान आपने किया।"

मिसेज़ रोसा ने लिफ़ाफ़ा खोलकर समन पढ़कर सुना दिया। इसमें समन का विषय नहीं बताया गया।

"ओत्तो को पता कैसे चला?"

"बताया कि उस चश्मेवाले से । वह वहाँ टाइपिस्ट है।"

"ओत्तो की क्या राय है?"

"ओत्तो का कहना है कि नतीजा बुरा हो सकता है। चश्मेवाला कहता है कि इसकी सज़ा दस साल जेल की भी हो सकती है। मुकदमे का खतरा न होता तो इसे तुरन्त दे देती। हाँ बड़ी खुशी से।"

"लेकिन अब तो उलझ गए हैं।"

"जी हाँ।"

"अब तो पीछे नहीं हट सकते।"

"सही है।"

"मेरा तो विचार है।" राऊल उठ खड़ा होकर भाषण देने लगा, "पीछे न हटना सिद्धांत की बात है। अपने दृष्टिकोण से हमने पुण्य सम्पन्न किया था। कर्तव्य, पवित्र कार्य जिसे हमारे चिरंजीवी नेता ने हमें सौंप दिया था, जिसने हमसे सौगन्ध ली थी कि एक-एक प्राणी को बचाएँ और हमारे महान साम्राज्य की गोद में सौंपें।"

"भाषण देना बन्द करो, राऊल," दादी ने उसे रोक दिया। राऊल बैठ गया। "अब तो एकाग्रचित होना चाहिए। रोसा डरती है। तुम्हारा पवित्र कर्तव्य है और मैं...मेरा दिल बहुत लगा हुआ है। अगर हो सके...कौन जाने वहाँ क्या हाल है।" यह सब बहुत धीमे बोली, उनकी आवाज़ काँप गई, वह सिमट-सी गई।

सूप पीते हुए यह सब कुछ मेरे सामने बोले और मुझे मालूम हो गया कि मुझे जाने नहीं देंगे। उनका फैसला दृढ़ से दृढ़ होता जा रहा था। उन्होंने किसी वजह से ज़िद पकड़ी कि मुझे हरे बगीचे में सफेद घर में नहीं जाने देंगे।

दादी जूठे बरतन समेटकर दरवाज़े की ओर चली, दहलीज़ से ठोकर लग गई और लड़खड़ाई। मैं उसी सेकंड बाँहें फैलाए उनके पास खड़ी हुई। मिसेज़ रोसा सूनी निगाह से दूरी तक देखती बैठी रही। राऊल ने जम्हाई ली। उसी क्षण दादी के अकेली रह जाने का डर मेरी समझ में आ गया।

दादी झुककर मेरा माथा चूमकर फुसफुसाई : "मुन्नी, तुम न होतीं तो मैं क्या करती?"

बुधवार को मिसेज़ रोसा ने आफिस से ज़रा जल्दी आकर सबसे अच्छे कपड़े पहन लिये। 'वहाँ' चली गई। आदमख़ोर घर के सामने इन्तज़ार कर रहा था और मुझे मालूम था कि जो भी हो ये लोग मुझे जाने नहीं देंगे।

मिनट गिन रही थी। दादी खिड़की के पास बैठी तसबीह फेर रही थी। प्रार्थना करती थी कि 'वे लोग' मुझे जाने न दें।

दूसरे बच्चे ख़रगोश टीले से फिसल रहे हैं, किसी का दिल भारी नहीं है। लेकिन मुझसे अपना घर छिन गया था।

अँधेरा हो रहा था। दादी ने आज झपकी नहीं ली।

घंटी बज गई। रोसा वापस आई।

"क्या बात है?"

"कुछ नहीं। सूची में नहीं है। कोई इसकी तलाश नहीं कर रहा।"

"फिर?"

''जन्म प्रमाण पत्र देखना चाहते थे। उस साल पैदा हुए सब बच्चों का पता लगाना चाहते थे। मैं गनीमत से प्रमाणपत्र साथ लाई।"

''लेकिन...रोसा?"

''हाँ, मालूम है, माँ जी। इन्तज़ाम हो गया, सब ठीक है, बिलकुल ठीक है।"

हँसती हुई चली गई।

हे भगवान, कितना घर वियोग का दुख है, यह शायद बीमारी है।

दादी ने रविवार को एक किताब पढ़कर सुनाई, अफ़सर ने घुटने टेककर कहा : ''मैं जी नहीं सकता।" मैंने मन ही मन बार बार दुहराया मैं जी नहीं सकती। राऊल कमरे में घुस गया। मुझसे रंगीन पेंसिलें माँगीं। मैंने पूछा : ''राऊल, तुम अंकल ओत्तो से अब नाराज़ नहीं हो?"

वह बोला : ''क्या? मैं नाराज़ नहीं हूँ? बहुत नाराज़ हूँ। लेकिन कुछ मामले ऐसे हैं कि उसके अलावा कोई मदद नहीं कर सकता।"

''क्या मामले?"

''कूटनीति के। जोन्नी इधर, जोन्नी उधर। हम लोग अच्छी खासी मुसीबत में फँस गए।"

मन ही मन उनकी 'अच्छी मुसीबत' पर हँसी आई।

फ्राइवल्द परिवार के लोग देखने में शरीफ लगते हैं, लेकिन अब मुझे मालूम है।

बृहस्पतिवार को ख़रगोश टीले जाऊँगी। और वापस नहीं आऊँगी। हँसमुख अमरीकी ने मदद करने का वायदा किया था। कहा था : ''बृहस्पतिवार को ख़रगोश टीले आओ। कुछ तो करना चाहिए।"

सामान बाँध लिया। कापियाँ, कागज़ की गुड़िया, मास्टर जी की चिट्ठी, दादी माँ की कोई निशानी। दादी माँ को याद करती रहूँगी, दादी माँ मुझे इसलिए जाने देना नहीं चाहती क्योंकि दिल लग गया है। हाँ, वह पुस्तक 'वन में घूमता हूँ अकेला...'। क्या दादी माँ बहुत नाराज़ होंगी जब यह पुस्तक रैक में नहीं मिलेगी?

दो दुनियाएँ हैं। अब मालूम है।

हाँ मुझे यहाँ पाला-पोसा गया और पहनने के लिए कपड़े मिलते थे। इस व्यय की प्रतिपूर्ति तो करनी चाहिए। मेरे पास पैसा क्या है! यही एक मार्क, बीस फेनिग हैं। यही सही।

अब अटैची। ओवन खोला अटैची गायब। नीचे ओवन में गोल सी लेबल नज़र आई। अलग होकर गिर गई होगी। मेरी अटैची की एक ही निशानी। Made in Czechoslovakia.

इसे होंठों से लगा लिया, दिल से लगा लिया। सब ख़त्म हो गया। अब मुझे जाने नहीं देंगे। अटैची मुझसे छीन ली ताकि मेरे पास कोई प्रमाण न रहे। किसी

ने उनको बताया कि अटैची कहाँ है। किसी शैतान ने, अंकल ओत्तो ने, जिसे बूढ़े चश्मेवाले ने बताया होगा।

मेरी नीना, मेरा मोज़ा, मेरी बच्चे वाली टोपी, मेरी अटैची, मेरा घर।

बिना कोट पहने दौड़ पड़ी।

हँसमुख वहाँ खड़ा मुस्करा रहा था।

''अंकल..."

''जेम्स," उसने सम्बोधन पूरा किया।

''अंकल जेम्स, सर्वनाश हो गया। मुझसे अटैची छिन गई। सब कुछ छिन गया, कुछ नहीं बचा, बस यह लेबल बच गई।"

वह सन्न रह गया और मैं बर्फ़ पर गिर पड़ी और घायल कुत्ते जैसे ज़ोर से रोने लगी। और अचानक याद आ गया कि बहुत पहले भी किसी घर के सामने ज़मीन पर बैठी कुत्ते जैसे रोई थी। तब मुझे आगे जाना था और मैं नहीं चाहती थी। हाँ ऐसा मुझ पर पहले भी गुज़र गया था।

अंकल जेम्स मुझे उठाकर बोला : ''अटैची की चोरी होना बड़ी गवाही है। सुनो लेनि, तुम्हें सूची में दर्ज़ होना चाहिए। चेकिया के किसी को तुम्हारी तलाश करना ज़रूरी है। क्या वहाँ किसी को जानती हो? हो सकता भी है कि वहाँ तुम्हारा अपना कोई नहीं है।"

''मेरी मम्मी वहाँ है," मैंने दृढ़ता से कहा।

''हाँ हाँ, हो सकता है, लेकिन हमें यहाँ कोई मिलना चाहिए जो..."

''मास्टर जी बाउम।"

बर्फ़ गिरनी शुरू हुई। हम मास्टर जी के घर चल दिए। मुझे लगा कि राजकुमार मुझे किसी महल में ले जा रहा है। घर का दरवाज़ा खटखटाया। दरवाज़ा अपने आप खुल गया। आगे चल कर दूसरा दरवाज़ा खटखटाया, अन्दर आए। कमरे में इतनी सर्दी थी जितनी बाहर। मास्टर जी गर्म कपड़े पहने हुए कापियाँ संशोधित कर रहे थे। बोले : ''माफ़ करें, मैं कमरा गर्म नहीं कर सकता। ईंधन नहीं है। मुझे तो आदत है, नज़रबन्दी कैम्प में रह चुका हूँ।"

अमरीकी ने अपना परिचय दिया। फिर बोलना शुरू किया : ''मिस्टर बाउम, मैं आपको नहीं जानता लेकिन लड़की को अपसे प्यार है। हमें पता चला कहना चाहिए कि लड़की ने पता लगाया कि यह छीनी हुई बच्ची होगी।" फिर सारा किस्सा सुनाया, ''मेरी कोई ऊँची पदवी नहीं है और हमारे बॉस से बड़ी मदद की आशा नहीं की जा सकती।"

मास्टर जी उसकी अजीब सी बोली, आधी जर्मन, आधी क्वाउ क्वाउ सुनते हुए मुझे देख रहे थे। फिर पूछा : ''वह अटैची कहाँ है?"

जैम्स बोला : ''यही बात है कि गुम हो गई, चोरी हो गई। बस यह लेबल बच गई दिखा दो तो। लेकिन मैंने अटैची देखी, कसम खाता हूँ।"

मास्टर जी देर तक लेबल पर Czechoslovakia देखते रहे। मैंने उन्हें हरा लिफ़ाफ़ा दिखा दिया जिसके अन्दर चिट्ठी थी कि 'तू फ्राइवल्द परिवार की नहीं है।" मैंने कहा : ''यह अन्नेलोरे से मिल गया।"

''और इससे पहले?" उन्होंने पूछा। ''क्या पहले भी कुछ मालूम था?''

हाँ, एक तरह से मालूम था। बहुत पहले जानती थी कि उनकी आत्माओं और मेरी आत्मा के बीच 'दूसरी दुनिया' है। लेकिन हमेशा समझती थी कि यह सिर्फ प्यार की इच्छा है। हाँ, फोटो में राऊल फ्राइवल्द जी की लम्बी खोपड़ी और नीली आँखें देखती थी लेकिन दिल में दूसरा चेहरा था। हाँ, मिसेज़ रोसा मुझ पर शासन करती थी लेकिन दूसरी महिला, भूरे बालोंवाली, मेरे गद्दे पर झुकती थी। हाँ।

यह सब कुछ मैंने सोचा, लेकिन नहीं कह पाई। मेरे मुँह पर नौ ताले लगे हुए थे। जो सोचती हूँ वह नहीं कह सकती हूँ, और अगर कहूँ तो मेरे शब्दों की शक्ल पर झुर्रियाँ, सिलवटें हैं, या बेवकूफ़ मुस्कराहट। इस समय भी : ''मुझे नहीं मालूम। कभी कभी सोचा करती थी कि मुझसे किसी को प्यार नहीं है।"

मैंने उनको रुक-रुककर अपने सपने सुनाये, रातों में सुनी हुई बातें बताईं और घर-वियोग का दुख बताया।

शायद देर तक बोलती रही। अचानक मुझे लगा मानो कोई दूसरी बच्ची बोल रही हो और सुनती हुई मैं हैरान हूँ कि यह सब कुछ मेरी ज़िन्दगी में कैसे समाया था। मुझे लगा कि लोग मेरा विश्वास नहीं करेंगे। सुनकर कन्धे उचकाएँगे, मुस्काएँगे लेकिन विश्वास नहीं करेंगे और वह कितने साल तक चला।

फिर देर तक सब ख़ामोश रहे। फिर हँसमुख बोला : ''इसका कुछ करना है। वहाँ पत्र भेजना है। पूछना है कि कोई इस लड़की की तलाश नहीं करता क्या?"

मास्टर जी बोले : ''ज़रूर, लेकिन किसको लिखें? और कैसे? मेरा भेजा पत्र कभी नहीं पहुँचेगा।"

मेरे दिमाग में बिजली जैसा विचार आया। ''मुझे मालूम है किसको लिखना चाहिए। पिछले साल हमारी कक्षा में एर्ना पढ़ती थी। यहूदी थी। उसकी मम्मी का देहान्त हुआ था और एर्ना अपनी आंटी के साथ रहती थी। दोनों प्राग चली गईं। इतना बताया था कि ओपेरा घर के पास रहेंगी।"

''शाबाश।" हँसमुख बोल उठा, ''बाउम जी, आप चिट्ठी लिखिए और मैं रेल-कर्मचारियों के हाथों भेज दूँगा। वापसी का पता मेरा होगा। सिगरेट, टिन, वगैरह दे दूँगा, वे सरहद पर से चिट्ठी भेज देंगे।"

अगले दिन मास्टर जी ने हमें यह पत्र पढ़कर सुनाया :

अदरणीया श्रीमती सिनकोवा,

मेरा पत्र आपको बड़ी आशाओं को लेकर ढूँढ़ेगा। मामूली जर्मन अध्यापक हूँ। नज़रबन्दी कैम्प में रह चुका हूँ। फिर भी शायद आप मेरा विश्वास नहीं करेंगी, क्योंकि जर्मन हूँ। लेकिन जब लेनी फ्राइवल्द मिल गई और उसकी आपबीती का पता चला, तब मुझे यह पत्र लिखने की हिम्मत हुई।

इस साल की पहली सितम्बर से उसकी कक्षा का अध्यापक हूँ। आगे की बेंच पर बैठी थी, अकेली, शान्त, उदास सी बच्ची। जल्द ही पता चला कि बच्ची का दिमाग बहुत तेज़ है, वह मेहनती भी है, सक्रिय है लेकिन उसके और कक्षा की दूसरी लड़कियों के बीच कोई अजीब सी अदृश्य दीवार है। ऐसी ही दीवार उसे उस परिवार से भी अलग करती है जिसमें वह रह रही है।

मुझे इसमें कुछ करना चाहिए था लेकिन नहीं किया जिस पर पछताता हूँ। ऐसा हुआ कि लेनी तरह तरह के संकेतों, उल्लेखों और अपने सोच-विचार से इस नतीजे पर पहुँची कि चेकोस्लोवाकिया से छीनी हुई बच्ची है।

लेनी की शिनाख़्त के कम निशान मिलते हैं। कुलनाम अक्षर स से शुरू होता है, निवास-स्थान अक्षरों होर से, पिता का नाम शायद व्लास्तिमिल है। संयोगवश लेनी को इसकी पुरानी अटैची अटारी में मिल गई, इसमें गुड़िया, कुछ चिथड़े और लेबल Made in Czechoslovakia मिले।

आदरणीया, अगर हो सके तो आप कृपया लेनी की शिनाख़्त कराने में सहायता करें

लेनी यहाँ लगभग सात साल से रहती है। चेक बिलकुल नहीं बोलती। लेकिन उसकी यादों और सपनों में एक 'दूसरी दुनिया' जीवित है। उसकी विशेषता एक तो यह है कि यहाँ हमेशा से अपने को परदेशी समझती आई है, दूसरे तो 'दूसरी दुनिया' में प्रवेश करने का उसका साहस।

यह सब मैंने पहले कभी किसी बच्चे में नहीं पाया था।

बड़े आदर के साथ

वोल्फगंग बाउम, अध्यापक

तब मास्टर जी ने अपने हाथों में मेरे हाथ लेकर कहा : 'लेकिन बेटी, अगर वहाँ तुम्हारा कोई अपना नहीं रहा, तो तुम क्या करोगी?"

''मेरी मम्मी वहाँ हैं और ज़रूर हैं। मुझे पूरा विश्वास है।"

फिर दिन गुज़रते गए।

रात में रोशनी बुझने के बाद चिट्ठी का जवाब मिलने का खेल खेलती हूँ। राऊल

अपना भाषण देता है। मुझ से नाराज़ होता है : ''तुम कितनी उदासीन हो।'' दादी से कहता है : ''यह लेनी कितनी आलसी नस्ल की है। आलसी और ढीठ।'' जो चाहे बोले।

खेल खेलना ज़रूरी नहीं, रोशनी बुझाना ज़रूरी नहीं। खिड़की के पास खड़ी थी सामनेवाले फुटपाथ पर जेम्स हाथ में बड़ा सफेद लिफ़ाफ़ा लिऐ चल रहा था। हाँ, पत्र भेजे छह हफ ते हुए।

पानी लेने जाने के बहाने घर से निकली, मास्टर जी के घर दौड़ पड़ी। अब लिफ़ाफ़ा खोल रहे होंगे। किससे प्रार्थना करूँ। भगवान से। लेकिन भगवान ने मेरी बहुत कम मदद की थी। अचानक बहुत डर लग गया। किसी भी क्षण तो आफ़त आ सकती है। हथेलियों से आँखें ढँक लीं। काश कि काश कि क्या?

''आदरणीय मित्र,

ये शब्द पहले कहीं सुने थे। इनके बाद कोई बुरी ख़बर नहीं आ सकती ।

आपका पत्र पढ़ते ही, 16 जनवरी को, मैंने समाजकल्याण मन्त्रालय के खोज विभाग को सूचना दी। जल्द ही पता लगाया गया कि लड़की ग्यारह साल की आलेना सीकोरोवा है, अध्यापक व्लस्तिमिल सीकोरा की बेटी, निवास स्थान 'होरी मातकी बोजी' कस्बे में। अक्तूबर, 1939 में वह जर्मन ख़ुफ़िया पुलिस से गिरफ तार हुआ और बारह जनवरी को मौत की सज़ा मिली। उसी साल अप्रैल में बच्ची की माँ नज़रबन्दी कैम्प में भेज दी गई और उसकी बेटी आलेना कोई नौ हफ ते तक ब्रुनो शहर के तथाकथित बाल-गृह में रही जो इन्हीं उद्देश्यों के लिए बना था। फिर आलेना की कोई ख़बर नहीं मिली। 'होरी मतकी बोजी' कस्बे में बच्ची का मृत्यु प्रमाण पत्र आया, दिनांक 15 मई, 1940।

1945 के मई में बच्ची की माँ वापस आई और अपने पति और बेटी की मृत्यु होने की ख़बर से टूट गई। अब अपने पिता के साथ रहती हैं जो क्लातोवी शहर में बागबान है। मैं आपका पत्र लेकर उनसे मिलने गई, उनकी खुशी का वर्णन करना कठिन है।

चेक सम्पर्क अफ़सर ने अमरीकी कल्याण विभाग से बातचीत की और चेकोस्लोवाक खोज दल ने ब्रुनो के 'बाल गृह' के कर्मचारियों से जिरह की। पता लगाया गया कि लेनी की शिनाख्त में कोई सन्देह नहीं।

मेरा विचार है कि आलेना का देशप्रत्यागमन थोड़े दिनों का मामला है।

सादर आपकी एमा सीनकोवा

आलेना को बहुत प्यार मेरी एर्ना की ओर से भी।''

मुझे पता नही कि मुझे क्या हो रहा था जब मास्टर जी यह सब पढ़ कर सुना

रहे थे। जब उन्होंने 'आलेना सीकोरोवा' कहा तो मुझे चक्कर आ गए और बेहद गर्मी लगी। मेरे पापा, तुम्हें उस रात को मौत की सज़ा के लिए ले गए थे। और तुमने मुझे हँसाया था क्योंकि तीन साल की थी और तुम मुझे उदास देखना नहीं चाहते थे। और इसके बाद 'बाल-गृह' में रही। वह अस्पताल नहीं था और मैं बीमार नहीं थी, कोई बीमारी नहीं थी, लेकिन दिल में बहुत बड़ा दर्द था और वे लेनी फ्राइवल्द बनाने से पहले मुझ से सब कुछ भुलवाना चाहते थे।

मुझे हमेशा मालूम था कि मेरी मम्मी कहीं हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं था। अब थोड़े दिन में...

''मास्टर जी, देश प्रत्यागमन क्या होता है?''

''अपने देश में वापसी, आलेना। थोड़े दिन बाद जाओगी।''

''मेरे पापा ने बुरा क्या किया, मौत की सज़ा क्यों मिली?'' जवाब सुनने से डर रही थी।

''उन्हें अपने देश से प्रेम था, आलेना। यह उन लोगों को सहन नहीं था।''

''उन लोगों को किसको?''

''अच्छा किसको यानी हम लोगों को यानी जर्मनों को यानी सब जर्मनों को नहीं, सिर्फ नाज़ी लोगों को।''

जब घर वापस आई तो सिर्फ दादी घर पर थीं। ओवन के पास बैठी थीं। मुझे उस क्षण दुख हुआ क्योंकि वह अब बिलकुल अकेली रह जाएँगी।

दादी मानो मेरे विचार भाँप गई हों, बोली : ''लेनि, मुझे अपना बचपन याद आता है। तब कितनी खुश थी। आजकल लोग एक दूसरे का भरोसा नहीं करते, शक करते हैं। मुझे लगता है कि इस दुनिया में अजनबी हूँ। मैं किसी को नहीं समझती, कोई मुझे नहीं समझता।''

''कोई भी नहीं?''

''कोई नहीं। सिर्फ सोचती हूँ कि शायद तुम बड़ी होकर मेरी रहोगी।''

मेरे दिल में टीस उठ गई, नहीं बोल सकी। दिल किसी से बात करने को चाहता था, किसी को बताना चाहता था कि दूर, बहुत दूर चली जाऊँगी। लेकिन यह मेरा रहस्य था।

और परवाह नहीं करूँगी कि दादी अकेली रहेंगी। अगर उनको मुझ से सच्चा प्यार होता तो कब का कहा होता लेनि, युद्ध ख़त्म हुआ, तुम घर जाओगी। लेकिन उनको अपने से प्यार है, समझती हैं कि मैं उनकी रहूँगी।

अगले दिन घर पर हंगामा मच गया। मिसेज़ रोसा ने मुझे कुछ बताना ज़रूरी नहीं समझा...अब तो मालूम था कि मेरी तलाश हो रही है, सूची में दर्ज़ हूँ। दादी ने मुझे

बांहों में भर लिया : ''अब तो बिचारी को बताना चाहिए...'' मिसेज़ रोसा ने उनको रोक दिया : ''जल्दबाजी नहीं चाहिए। कोई खास बात नहीं, लेनि। अमरीकी कमांडर से मिलना है, आज तीन बजे, बस।'' मेरा बँधा हुआ सामान देखकर पूछा, यह क्या है।

''मेरी अपनी चीज़ें।''

''अपने साथ क्यों लेती हो?''

राऊल ने टोक दिया : ''रहने दो, माँ। इसकी पूछताछ होगी, कहीं हाल और भी न बिगड़े।''

मैंने जानबूझकर पूछा : ''मुझ से क्या पूछेंगे?''

''बहुत सी बातें कैसे साथ खेलते थे, आपस में कितना प्यार था यही बताओगी न, लेनी रानी?''

मैंने जवाब दिया : ''हम तो बहुत कम साथ खेले, राऊल।''

जब घर से निकल रहे थे तो दादी माँ ने मुझे अशीर्वाद देकर कहा : ''भगवान करे सब ठीक हो जाए।''

मैंने सीढ़ी पर से जवाब दिया : ''हाँ ज़रूर ठीक हो जाएगा।''

कमान में अफ़सर ने मिसेज़ रोसा से नाम, पता आदि पूछा। बूढ़ा चश्मेवाला बड़ी तेज़ी से टाइप कर रहा था। विधवा है, पति ने वीरगति पाई थी। बच्ची? मिसेज़ रोसा ने मीठी आवाज़ में बताने लगी कि हाँ, बच्ची गोद ली हुई अनाथ है। वीरगति पानेवाले इसे लाए थे, कहकर कि हमारा पुण्य होगा। रोते रोते बताने लगी कि कितनी मुश्किल से बच्ची को पाला पोसा, उसके लिए क्या क्या किया था, सबका दिल उससे कितना लग गया।

अचानक काला कोट पहने एक महोदय ने उठ खड़े होकर कहा : ''लेकिन यह तो आपको मालूम था कि चेक बच्ची है?''

''नहीं जी, यह बिलकुल मालूम नहीं था, कभी दिमाग में ऐसा विचार नहीं आया, इसके तो बाल सुनहरे थे, लेकिन बाद में धीरे धीरे भूरे हुए।''

मैंने कह डाला : ''हाँ तो मिसेज़ फ्राइवल्ड, आपको ज़रूर मालूम था, रात में मैंने आपकी फुसफुसाहट सुनी थी, अटैची की बात, फिर मुझे अटैची मिल गई, मुझे कब से मालूम है किग मैं आलेना सीकोरोवा हूँ।''

मेजर कुछ घबराया और बर्फ़ की रानी तमतमाई। मैंने अपने सामान में से लेबल निकालकर कमांडर को दिखाई।

अचानक किसी ने दरवाज़ा खटखटाया और जेम्स ने मेरी अटैची लिए प्रवेश किया। बोला : ''काम हो गया। मिस्टर ओत्तो अटैची उठा ले गए थे, लेकिन जब मैंन मैसिज़ दी कि कमांडर को चाहिए तो...''

अच्छा तो कमांडर ओत्तो का बहुचर्चित ''दोस्त जोन्नी'' है।

अजनबी महोदय ने कहा : ''आलेना, ज़रा दिखा दो इस अटैची में क्या है?''

मैंने अटैची जल्दी खोली तो महोदय ने कहा : ''यह गुड़िया ज़रा दे दो।'' मैंने नीना को उनकी तरफ बढ़ा दिया। तब सब चौंक गए। सब ख़ामोश हुए और मानो वे शब्द हवा में फँस गए हों यह गुड़िया ज़रा दे दि। विदेशी शब्द थे, मैं ये शब्द नहीं कह सकती, फिर भी समझ गई।

अजनबी महोदय ने मुझे लिपटाकर बाँहों में भर कर उठाया। बोला : ''तुम्हें लेने आया हूँ। तुम जैसे पाँच बच्चे उनके अपने देश पहुँचा चुका हूँ। तुम छठी हो।''

मिसेज़ रोसा मेजर से कुछ कहने वाली थी, लेकिन उसने कहा : ''खेद है मैडम।''

जेम्स ने मुझे पिछवाड़े में पहुँचा दिया जहाँ रेड क्रास के कमरे हैं। मुझे बताया कि अब स्कूल नहीं जाना है, लेकिन अगर मेरी इच्छा है तो टोनी और मास्टर जी मुझ से विदा लेने आएँगे। मैंने पेंसिल और कागज़ माँगा और दादी को चिट्ठी लिखी :

आदरणीया श्रीमती फ्राइवल्द,

आपको छोड़ने का मुझे दुख है क्योंकि आप बहुत अच्छी हैं। मुझे देखने आइए। मेरी मम्मी हैं और मेरे नाना बागबान हैं। यादगार के रूप में यह कागज़ की गुड़िया रखिये। पीछे उसका नाम लिखा हुआ है। इस गुड़िया से यहाँ मुझे सबसे ज़्यादा प्यार था।

सादर

आलेना सीकोरोवा

अपने जीवन में पहली बार पलँग पर सोई। गद्दे पर सोने से कहीं अच्छा है। सुबह टोनी आई। मैंने उसे बाँहों में भर लिया। दोनों गम्भीर थीं।

''देखो तोनि, मेरा बड़ा रहस्य था।''

''लेनि, मुझे कब से मालूम था। होर्स्त के चले जाने के बाद इसकी चर्चा होती थी। स्कूल में भी चर्चा होती थी। जब हमने वह अटैची खोली थी तभी मेरे दिमाग में आया था कि उस बात से इसका कोई सम्बंध है। और फिर ''प्लीज़ बुरा न मानो, क्षमा करो मैंने मम्मी को बताया।''

पहले मुझे थोड़ा बुरा लगा लेकिन फिर उससे लिपटकर कहा : ''बुरा नहीं मानती, अब तो परवाह भी नहीं है, तोनि।''

टोनी बोली : ''अब मेरी सहेली कौन होगी?''

''मैं तुम्हें, तोनि, नहीं भूल सकूँगी। तुम्हें, दादी को और मास्टर जी को। तुम

तीनों कितने अच्छे रहे, दूसरों से बिलकुल अलग।"

"बुरे लोग बहुत मिलते हैं।"

"हाँ, न मिलते तो कितना अच्छा होता।"

"जहाँ तुम जा रही हो वहाँ शायद नहीं होंगे।"

तब मेरे दिमाग में आया : "तोनि, मेरे साथ चलो। हमारा बड़ा बगीचा है, एक फूल के पास से दूसरे फूल के पास घूमती रहेंगी कितना अच्छा होगा। चलोगी?"

"मैं नहीं जा सकती।" टोनी ने आपत्ति की, "मेरा देश तो यह है।"

"क्या तुम यहाँ खुश हो?"

"मैं कहीं और नहीं रह सकती। जैसे तुम यहाँ नहीं रह सकती हो।"

"लेकिन अब, तोनि, सो जाने से पहले न कहा करो कि अपने दुश्मनों से नफ़रत है।"

"नहीं, मैं कहा करूँगी कि मुझे अपने मित्रों से प्यार है।"

टोनी दरवाज़े की ओर मुड़कर आँसू छिपा रही थी। आँखें झुकाकर बोली : "हो सके तो हमें क्षमा करो। अगर दूसरे काल में जीतीं तो..."

मैं ख़ामोश रही क्योंकि उसकी बातों से मुझे दुख हुआ। हाँ, वह सब कुछ नहीं होना चाहिए था और अब खेल की सहेली नहीं होगी। लेकिन अब वैसे भी मुझे नहीं खेलना, यह तो बचपना है।

अगले दिन उस चेक महोदय के साथ रवाना हुई।

उनका नाम वोनद्रा जी है। रेलवे-स्टेशन के सामने जेम्स और मास्टर जी प्रतीक्षा कर रहे थे। सब कुछ ठीक ऐसा था जैसा अपने सपनों में देखा करती थी।

जेम्स मेरे लिए बड़ी लाल गेंद ले आया। हँस रहा था : "शाबाश, तुम जा रही हो।"

मास्टर जी छोटी सी किताब ले आए। नई नहीं थी, ज़रा घिसी हुई थी। बोले : "यह मुझे किताबों में मिल गई।" शीर्षक था 'चेक लोक-कथाएँ'। "ज़रा बड़ी होकर तुम पढ़ लोगी।", बोले और आवाज़ कुछ रुँध गई।

जेम्स से मैंने कहा : "मुझे न भूलना, जेम्स।"

"नहीं भूल सकता, मुन्नी। और तुम्हारा किस्सा सबको सुनाऊँगा। क्योंकि कुछ लोग ऐसे हैं जो भूल जाएँगे।"

अब वोन्द्रा जी और मैं रेलगाड़ी में बैठ गए। खिड़की से देख रही थी लाल टोपीवाले आदमी ने इशारा किया। रेलगाड़ी चल पड़ी। प्लेटफार्म पर दो आदमियों ने रूमाल हिलाए। रूमाल हवा में फड़फड़ाए। वे दोनों छोटे से छोटे लगते जा रहे थे। जर्मनी मेरे आगे घटता जा रहा था। अब छोटा-सा टुकड़ा आगे रह गया है। सब कुछ ऐसा है जैसा मेरे सपनों में होता था।

"क्या दिल थोड़ा घबराता है?" वोन्द्रा जी ने पूछा। "नहीं", मैंने ना में सिर हिलाया। और चूंकि मेरे मुँह पर फूहड़पन के सात ताले लगे हुए हैं इसलिए मुँह से इतना ही निकला : "जेम्स अपने देश में वापस आकर लोगों को बताएगा।"

मेरे आगे जर्मनी कम होता जा रहा है, अब सिर्फ छोटा सा टुकड़ा रह गया और फिर कुछ नहीं। अनजाना धुँधला-सा रेलवे स्टेशन आ गया, खेब नामक नगर का। मेरे चारों ओर अजीब-सी अनजानी भाषा सुनाई देती है। वास्तव में मेरी मातृभाषा। रेलगाड़ी से उतर गए। वोन्द्रा जी ने प्लेटफार्म के चारों ओर दृष्टि दौड़ाई। मैं उनके पीछे चली।

एक दुबली-सी सुन्दर महिला हमारे पास आ रही है। भूरे बाल, नीली आँखें देवी जी, मैं तो अपने सपनों में कितनी बार आप से मिली, आप तो...

"श्रीमती यरमीला सीकोरोवा?"

वह हाँ भी नहीं कह पाईं। उनकी आँखों ने मुझे दूरी से प्यार किया, अब बाँहें बढ़ाईं, काँप रही हैं। घुटने टेककर मेरा सिर अपने दिल से लिपटा लिया।

मैं मौन रही। यही प्रेम है। मौन रही, क्योंकि मुझे अपनी मातृभाषा में 'मेरी माँ' कहना नहीं आता था।

❑❑❑